CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/4/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. अकेलेपन से जो लोग दुखी हैं,
वृत्तियाँ उनकी
निश्चय ही, बहिर्मुखी हैं।
सृष्टि से बाँधने वाला तार
उनका टूट गया है;
असली आनन्द का आधार
छूट गया है।
उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?
जड़-कटे पौधों में जीवन की धार कहाँ ?
तब भी, जड़-कटे पौधों के ही समान
रोते हैं ये उखड़े हुए लोग बेचारे;
जीना चाहते हैं भीड़-भम्भड़ के सहारे।
भीड़, मगर, टूटा हुआ तार
और तोड़ती है
कटे हुए पौधों की
जड़ नहीं जोड़ती है।
बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं;
हम अपने को उतना ही और भूलते हैं।
जड़ जमाना चाहते हो
तो एकान्त में जाओ;
अगम-अज्ञात में अपनी सोरें फैलाओ।
अकेलापन है राह
अपने आपको पाने की;
जहाँ से तुम निकल चुके हो,
उस घर में वापस जाने की। [5 अंक]

1(i). वृत्तियाँ उनकी, निश्चय ही बहिर्मुखी हैं – पंक्ति के संदर्भ में 'वृत्ति' का अर्थ है – [1 अंक]

(A) व्यापार
(B) स्वभाव
(C) कर्त्तव्य
(D) वृत्तांत

सही उत्तर: (B) स्वभाव

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बहिर्मुखी व्यक्ति की प्रवृत्ति और स्वभाव का वर्णन है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: बहिर्मुखी विशेषण की संगति कवि कहता है कि अकेलेपन से दुखी लोगों की वृत्तियाँ बहिर्मुखी हैं। यहाँ बहिर्मुखी का संबंध व्यक्ति के बाहर की ओर उन्मुख रहने वाले स्वभाव से है। अतः वृत्ति का अर्थ उसकी मानसिक प्रवृत्ति अथवा स्वभाव होगा।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच व्यापार का अर्थ व्यवसाय है; यहाँ किसी रोजगार की चर्चा नहीं है। कर्त्तव्य का अर्थ करने योग्य कार्य है, जबकि पंक्ति मनोवृत्ति बताती है। वृत्तांत किसी घटना का विवरण होता है, जिसका इस संदर्भ से संबंध नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है – स्वभाव

त्वरित सुझाव: किसी शब्द के अनेक अर्थ हों तो उसके साथ आए विशेषण से प्रसंग के अनुकूल अर्थ चुनें।

1(ii). 'उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?' – पंक्ति से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) मूल से अलग होने पर नदियों में प्रवाह नहीं रहता।
(B) मूल से अलग होने पर नदियों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।
(C) उद्गम स्थल से अलग होने पर नदियों में सौंदर्य नहीं रहता।
(D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

सही उत्तर: (D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

हल:

अवधारणा:

- नदी के उद्गम और पौधे की जड़ के बिंब मनुष्य के जीवन में अपने मूल से संबंध का महत्त्व बताते हैं।
- काव्य-पंक्ति का अभिप्राय उसके प्रतीकात्मक जीवन-संदेश से ग्रहण करना है।

चरण 1: नदी के प्रतीक का आशय कवि ने उद्गम से छूटी नदी और जड़-कटे पौधे की तुलना अपने मूल से उखड़े लोगों से की है। जैसे स्रोत से संबंध टूटने पर नदी की जीवंतता घटती है, वैसे ही मनुष्य अपनी जड़ों से अलग होकर असली आनंद का आधार खो देता है। इस प्रकार नदी का बिंब मानव-जीवन के सौंदर्य और सार्थकता की क्षति व्यक्त करता है।

चरण 2: शाब्दिक और लाक्षणिक अर्थ का अंतर (A) नदी के प्रवाह और (B) उसके अस्तित्व तक सीमित शाब्दिक कथन हैं। (C) केवल नदी के सौंदर्य की बात करता है। प्रश्न अभिप्राय पूछता है, इसलिए जीवन पर लागू व्यापक भाव लेना चाहिए। (D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य न रहने की बात कहकर कविता के आत्मबोध और मूल से जुड़ाव के संदेश को ठीक व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है – मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

त्वरित सुझाव: अभिप्राय पूछे जाने पर नदी या पौधे के शाब्दिक गुणों के बजाय कविता का मानव-जीवन संबंधी संदेश चुनें।

1(iii). भीड़ का क्या स्वभाव है ? [1 अंक]

(A) लोगों की आलोचना करना
(B) पौधों को जड़ से काटना
(C) दुखी को और दुखी करना
(D) दूसरों का उपहास करना

सही उत्तर: (C) दुखी को और दुखी करना

हल:

अवधारणा:

- भीड़ के प्रभाव का निर्णय कविता की स्पष्ट पंक्तियों के आधार पर करना है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ कवि कहता है कि भीड़ टूटा हुआ तार और तोड़ती है तथा कटे हुए पौधों की जड़ नहीं जोड़ती। इससे पता चलता है कि जो व्यक्ति पहले से भीतर से टूटा और दुखी है, भीड़ उसके मूल दुख को दूर करने के बजाय बढ़ाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखना (A) आलोचना और (D) उपहास का उल्लेख काव्यांश में नहीं है। (B) पौधों को वास्तव में जड़ से काटने की बात कहता है, जबकि कविता में जड़-कटा पौधा उखड़े हुए मनुष्य का प्रतीक है। इसलिए दुखी को और दुखी करना ही उपयुक्त अर्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है – दुखी को और दुखी करना

त्वरित सुझाव: प्रतीक को वास्तविक घटना न मानें; उसके पहले और बाद की पंक्तियों से मनुष्य के जीवन का संकेत समझें।

1(iv). 'बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं' – पंक्ति में 'बाहरी तरंग' से आशय है – [1 अंक]

(A) सांसारिक माया

(B) सागर की लहरें

(C) दूसरों का सहारा

(D) भौतिक साधन

सही उत्तर: (A) सांसारिक माया

हल:

अवधारणा:

- बाहरी तरंगें व्यक्ति को अपने अंतर्मन से दूर करने वाले सांसारिक आकर्षणों का संकेत हैं।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ बाहरी तरंगों पर फूलने के बाद कवि कहता है कि हम अपने को और भूलते हैं। अतः यहाँ तरंगें बाहरी संसार की चकाचौंध, आकर्षण और मोह का प्रतीक हैं, जिनमें उलझकर व्यक्ति आत्मबोध से दूर हो जाता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना सांसारिक माया इन सभी बाहरी आकर्षणों को समेटती है। सागर की लहरें शाब्दिक अर्थ हैं और प्रसंग में अनुपयुक्त हैं। दूसरों का सहारा केवल निर्भरता बताता है। भौतिक साधन बाहरी आकर्षणों का एक सीमित पक्ष हैं, जबकि पंक्ति का आशय व्यापक सांसारिक मोह है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है – सांसारिक माया

त्वरित सुझाव: कविता में किसी प्रतीक का अर्थ चुनते समय अगली पंक्ति में बताए गए प्रभाव को आधार बनाएँ।

1(v). 'जड़ जमाना चाहते हो, तो एकान्त में जाओ' – इन पंक्तियों में 'जड़ जमाना' से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अपने आप को पहचानना

(B) अपने पाँव जमाना

(C) अपना वर्चस्व स्थापित करना

(D) बस जाना

सही उत्तर: (A) अपने आप को पहचानना

हल:

अवधारणा:

- एकांत का उद्देश्य आत्मचिंतन द्वारा अपने वास्तविक स्वरूप का बोध पाना है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: कविता के अंतिम अंश का संकेत जड़ जमाने के लिए एकांत में जाने को कहा गया है। आगे अकेलेपन को अपने आपको पाने

की राह बताया गया है। इसलिए जड़ जमाना यहाँ अपने भीतर उतरकर अपनी पहचान और मूल से संबंध स्थापित करने का लाक्षणिक अर्थ रखता है।

चरण 2: भ्रमकारी अर्थों का निराकरण अपने आप को पहचानना कविता के आत्मबोध वाले संदेश से सीधे मेल खाता है। अपने पाँव जमाना सामान्यतः स्थिर स्थिति बनाना है। वर्चस्व स्थापित करना दूसरों पर प्रभाव जमाना है और बस जाना किसी स्थान पर रहना है; ये एकांत और आत्मचिंतन के आशय से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है – अपने आप को पहचानना

त्वरित सुझाव: मुहावरे का सामान्य अर्थ चुनने से पहले देखें कि कविता की अंतिम पंक्तियाँ उसका कौन-सा विशेष अर्थ खोलती हैं।

---

2. प्रगति मैदान में बहुत से मेले लगते हैं, लेकिन विश्व पुस्तक मेला का अपना आनंद है। यह मेला नहीं, पुस्तकों के साथ जीने, उन्हें महसूस करने का उत्सव है। बीते तीन दशकों से, जब से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव हुआ है, मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग इसी भय में जीते रहे हैं कि कहीं कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले। जैसे-जैसे चिंताएँ बढ़ी, पुस्तकों का बाजार भी बढ़ता गया। उसे बढ़ना ही था – आखिर साक्षरता दर बढ़ रही है, ज्ञान पर आधारित जीविकोपार्जन करने वालों की संख्या बढ़ रही है। पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं।

असल में विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने-बेचने की जगह नहीं है। यह पुस्तक प्रेमियों की जरूरत को एक स्थान पर पूरा करने का केवल बाजार नहीं है क्योंकि केवल पुस्तक खरीदने के लिए तो दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं, जो घर बैठे किताबें पहुँचा देती हैं, बल्कि एक उत्सव है। दरअसल, पुस्तक भी इंसानी प्यार की तरह होती है, जिससे जब तक बात न करो, सामने न हो, स्पर्श न करो, अपनत्व का अहसास नहीं होता। फिर, तुलनात्मकता के लिए एक ही स्थान पर एक साथ इतने सजीव उत्पाद मिलना एक बेहतर प्रचार का विकल्प और मनोवृत्ति भी है। पुस्तक मेला एक त्योहार है, पाठकों, लेखकों, व्यापारियों, बच्चों का। हर दिन कई सौ पुस्तकों का लोकार्पण, बीस-पच्चीस गोष्ठी-विमर्श, दस-पंद्रह लेखकों से बातचीत के सत्र और बच्चों की गतिविधियाँ। ढेर सारे विचार, मतांतर एक ही छत के नीचे, पर सभी का एक ही लक्ष्य, ज्ञान को विस्तार मिले।

दिन चढ़ते ही लोग कंधे छीलती भीड़ में उचक-उचक कर लेखकों को पहचानने का प्रयास करते हैं। कहीं कविता पाठ चलता है, तो कहीं पर व्यंग्य और कहानी पेश करने का आयोजन। इस मेले की खासियत यह भी है कि दूर-दराज से आए और नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को तलाशते दिखते हैं। विदेशी मंडप में भले ही अधिकांश पुस्तकें केवल प्रदर्शन के लिए होती हैं, लेकिन कुछ लोग इनसे प्रेरणा प्राप्त करते भी दिखाई देते हैं। बच्चों की नैसर्गिक रचनात्मक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए बाल मंडप एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण होता है। पुस्तक मेला में दिल और दिमाग, दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं, तभी तो यह मेला नहीं हैं, आनंदोत्सव है। पुस्तकों का वसंतोत्सव है, जो आश्वस्त करता है कि मुद्रित शब्दों की शक्ति, सहकार और सौंदर्य अब भी विद्यमान है। [10 अंक]

2(i). गद्यांश के आधार पर पुस्तकों का जीवन में महत्त्व है – [1 अंक]

(A) ज्ञान अर्जित करने के लिए

(B) रोजगार प्राप्त करने के लिए

(C) मनोरंजन प्राप्त करने के लिए

(D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

सही उत्तर: (D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पुस्तकों का महत्त्व गद्यांश में मनुष्य की विचार संबंधी और मानसिक आवश्यकताओं से जुड़ा है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण गद्यांश स्पष्ट करता है कि पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं। इसका आशय है कि पुस्तकें विचारों को दिशा देती हैं, जिज्ञासाओं को शांत करती हैं और मानसिक आवश्यकता की पूर्ति करती हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण ज्ञान अर्जित करना पुस्तकों का लाभ है, किंतु यह यहाँ दिए गए वैचारिक और मानसिक पक्ष को पूरा नहीं समेटता। रोजगार ज्ञान आधारित जीविकोपार्जन के संदर्भ में आया है, पुस्तकों का मुख्य महत्त्व नहीं है। मनोरंजन को भी इस कथन का आधार नहीं बनाया गया। इसलिए (D) सबसे सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है – वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

त्वरित सुझाव: गद्यांश-आधारित प्रश्न में सामान्य जानकारी की अपेक्षा लेखक के स्पष्ट कथन से सबसे निकट अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(ii). सूचना प्रौद्योगिकी से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना।

(B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

(C) सूचनाओं के आदान-प्रदान का विकास करना।

(D) सूचना क्षेत्र में संदेश, तस्वीर या विचार दूसरे स्थान पर पहुँचाना।

सही उत्तर: (B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

हल:

अवधारणा:

- सूचना प्रौद्योगिकी में सूचना संबंधी कार्यों के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग निहित है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: पद के दोनों अंश सूचना का संबंध संदेश और जानकारी से है तथा प्रौद्योगिकी का संबंध तकनीक के प्रयोग से है। गद्यांश में कंप्यूटर, टी.वी. और सी.डी. का उल्लेख इसी प्रसंग में हुआ है। इसलिए सूचना के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना उचित अर्थ है।

चरण 2: अन्य अर्थों का अंतर (A) केवल जानकारी पहुँचाने का कार्य बताता है; उसमें तकनीक आवश्यक नहीं कही गई है। (C) आदान-प्रदान के विकास का सामान्य कथन है। (D) संदेश, तस्वीर या विचार पहुँचाने तक सीमित है और तकनीकी प्रयोग को स्पष्ट नहीं करता। (B) दोनों शब्दों का अर्थ एक साथ व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है – सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

त्वरित सुझाव: संयुक्त पद का अर्थ निर्धारित करते समय उसके दोनों शब्दों की अर्थपूर्ण उपस्थिति जाँचें।

2(iii). सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव से किस क्षेत्र के लोगों को अधिक चिंता होने लगी ? [1 अंक]

(A) छापे खाने से जुड़े लोगों को

(B) तकनीक जगत से जुड़े लोगों को

(C) आई.टी. जगत से जुड़े लोगों को

(D) हाथ का काम करने वाले लोगों को

सही उत्तर: (A) छापे खाने से जुड़े लोगों को

हल:

अवधारणा:

- चिंता किस समूह को थी, इसका उत्तर गद्यांश के आरंभिक अनुच्छेद से मिलता है।

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के प्रमाण तथा अन्य विकल्पों के अर्थ की तुलना से करना है।

चरण 1: संबंधित कथन पढ़ना गद्यांश बताता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव के बाद मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग भय में जीते रहे। उन्हें आशंका थी कि कंप्यूटर, टी.वी. और सी.डी. की चकाचौंध छपे हुए अक्षरों को उदरस्थ न कर ले। यह छापेखाने से जुड़े लोगों की चिंता थी।

चरण 2: शेष समूहों का परीक्षण तकनीक जगत और आई.टी. जगत के लोगों को इस भय का धारक नहीं बताया गया; नई तकनीक तो चिंता का कारण है। हाथ का काम करने वाले लोगों का भी इस संदर्भ में उल्लेख नहीं है। इस प्रकार (B), (C) और (D) के बजाय (A) पाठ में दिए समूह को ठीक पहचानता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है – छापे खाने से जुड़े लोगों को

त्वरित सुझाव: किसे चिंता हुई और चिंता किससे हुई, इन दोनों को अलग रखें; उत्तर में प्रभावित समूह पहचानें।

2(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) पुस्तक मेले में सितारों और चित्रकारों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

(II) सैकड़ों पुस्तकों का लोकार्पण और लेखकों के साथ विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त होता है।

(III) अलग-अलग मत के लोग एक छत के नीचे खड़े होकर चर्चा करते हैं।

(IV) पुस्तक मेले में घूमने-फिरने और मित्र बनाने का अवसर मिलता है।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (II) सही है।

(C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

(D) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

सही उत्तर: (C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पर विचार गद्यांश में प्रतिदिन सैकड़ों पुस्तकों के लोकार्पण और लेखकों से बातचीत के सत्रों का स्पष्ट उल्लेख है। साथ ही अनेक विचार तथा मतांतर एक छत के नीचे उपस्थित रहते हैं और सबका लक्ष्य ज्ञान का विस्तार है। इसलिए कथन (II) और (III) पाठ से समर्थित हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण कथन (I) में सितारों और चित्रकारों से मिलने की बात है, जिसका गद्यांश में उल्लेख नहीं है। कथन (IV) में घूमने तथा मित्र बनाने की बात भी पाठ का कथ्य नहीं है। अतः (A) और (D) असंगत हैं। (B) केवल (II) को स्वीकार करता है, इसलिए उसमें सही कथन (III) छूट जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन (II) और (III) सही हैं। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(ix). गद्यांश में पुस्तक मेले को लेखक ने 'आनंदोत्सव' की संज्ञा दी है, क्योंकि – [1 अंक]

(A) असंख्य लोग यहाँ आकर आनंद प्राप्त करते हैं।

(B) असंख्य लेखक, विचारक, मंत्री और सितारे यहाँ मिलते हैं।

(C) यहाँ दिल और दिमाग दोनों लगते हैं।

(D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं।

सही उत्तर: (C) यहाँ दिल और दिमाग दोनों लगते हैं।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पर विचार लेखक कहता है कि पुस्तक मेले में दिल और दिमाग दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं। इसी के तुरंत बाद वह इसे आनंदोत्सव कहता है। यहाँ पुस्तकों से आत्मीय लगाव भी होता है और विचारों, विमर्शों तथा रचनाओं से बौद्धिक जुड़ाव भी होता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) भीड़ के आनंद तक सीमित है और लेखक द्वारा दिया गया विशिष्ट कारण नहीं बताता। (B) में मंत्रियों और सितारों का समावेश गद्यांश से पुष्ट नहीं है। (D) खुराक मिलने की बात करता है, जबकि प्रश्न से सीधे जुड़ी पंक्ति भावनात्मक और मानसिक सहभागिता बताती है। उस पंक्ति का निकटतम रूप (C) है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ दिल और दिमाग दोनों लगते हैं। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(v). पांडुलिपि कहते हैं – [1 अंक]

(A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को

(B) पाण्डवों द्वारा लिखित प्रति को

(C) नई पुस्तक की प्रति को

(D) अप्रकाशित पुस्तक की प्रति को

सही उत्तर: (A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पर विचार पांडुलिपि का अर्थ हस्तलिखित प्रति है। गद्यांश में नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों की तलाश करते दिखाई देते हैं। इस प्रसंग में यह लेखक की तैयार की हुई मूल रचना की प्रति है, जिसे वह प्रकाशन के लिए प्रस्तुत कर रहा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) शब्द को पाण्डवों से जोड़कर गलत अर्थ देता है। (C) नई छपी पुस्तक और उसकी प्रति का अर्थ बताता है, जो पांडुलिपि की परिभाषा नहीं है। (D) में अप्रकाशित होना बताया गया है; कोई प्रति अप्रकाशित हो सकती है, पर केवल अप्रकाशित होना उसे हस्तलिखित प्रति की परिभाषा नहीं देता। अतः सबसे सटीक शब्दार्थ (A) है।

चरण 3: निष्कर्ष हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(vi). पुस्तक मेले में इनमें से क्या नहीं होता ? [1 अंक]

(A) कविता पाठ

(B) कहानी वाचन

(C) नई पुस्तक का प्रचार

(D) पार्टी का प्रचार

सही उत्तर: (D) पार्टी का प्रचार

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पर विचार प्रश्न में क्या नहीं होता पूछा गया है। गद्यांश के अनुसार कहीं कविता पाठ होता है, कहीं व्यंग्य और कहानी प्रस्तुत की जाती है। पुस्तकों के लोकार्पण और एक ही स्थान पर अनेक पुस्तकों की उपलब्धता के कारण नई पुस्तकों के प्रचार का अवसर भी मिलता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए कविता पाठ वाला (A), कहानी वाचन वाला (B) और नई पुस्तक के प्रचार वाला (C), तीनों पुस्तक मेले की गतिविधियों से संगत हैं। किसी राजनीतिक पार्टी के प्रचार का उल्लेख पाठ में नहीं है। मेले का साझा लक्ष्य ज्ञान का विस्तार बताया गया है। निषेधात्मक प्रश्न में अनुपस्थित गतिविधि ही चुननी है।

चरण 3: निष्कर्ष पार्टी का प्रचार। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(vii). गद्यांश में आई "कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले।" – पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) पढ़ाई से लोगों की रुचि न हटा दे।

(B) पुस्तकों का महत्त्व कम न कर दे।

(C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे।

(D) मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे।

सही उत्तर: (C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पर विचार उदरस्थ कर लेना यहाँ शाब्दिक रूप से निगल जाने के अर्थ में प्रयुक्त होकर समाप्त कर देने की आशंका प्रकट करता है। मुद्रण से जुड़े लोगों को डर था कि कंप्यूटर, टी.वी. और सी.डी. की आकर्षक दुनिया छपी पुस्तकों की उपयोगिता और महत्त्व को पूरी तरह विस्थापित न कर दे।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) पढ़ाई से रुचि हटने की बात है, जबकि चिंता छपे अक्षरों और पुस्तकों के भविष्य की है। (B) केवल महत्त्व कम होने की बात कहता है, जो उदरस्थ शब्द की तीव्रता को पूरा नहीं व्यक्त करता। (D) सभी मुद्रित माध्यमों के अंत का व्यापक कथन है; इस पुस्तक-केंद्रित प्रसंग का सटीक आशय मुद्रित पुस्तकों के महत्त्व का समाप्त होना है।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(viii). मुद्रण तकनीक से संबंध है – [1 अंक]

(A) पत्रकार का

(B) लेखक का

(C) प्रकाशक का

(D) अर्थशास्त्री का

सही उत्तर: (C) प्रकाशक का

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पर विचार गद्यांश में मुद्रण तकनीक से जुड़े लोगों के भय और फिर पुस्तकों का बाजार बढ़ने की चर्चा है। आगे नए लेखकों के अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को खोजने का वर्णन आता है। पांडुलिपि को छपवाकर पुस्तक के रूप में पाठकों तक पहुँचाने का सीधा संबंध प्रकाशक से है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण पत्रकार समाचार जुटाने और प्रस्तुत करने से जुड़ा है तथा लेखक रचना लिखता है। दोनों मुद्रित सामग्री से संबंधित हो सकते हैं, किंतु प्रश्न में मुद्रण तकनीक से प्रत्यक्ष व्यावसायिक संबंध पूछा गया है। अर्थशास्त्री आर्थिक विषयों का अध्ययन करता है। इस संदर्भ में (A), (B) और (D) की अपेक्षा (C) सबसे उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकाशक का। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

2(x). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने और बेचने की जगह नहीं है।

कारण : आज किताब खरीदने-बेचने के लिए दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में उपस्थित कथन और प्रसंग है।
- विकल्प का चयन करते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ के कथ्य से मिलाना चाहिए।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश विश्व पुस्तक मेले को केवल खरीद-बिक्री का बाजार नहीं, पुस्तकों के साथ जीने और उन्हें महसूस करने का उत्सव बताता है। इसलिए कथन सही है। यहाँ लोकार्पण, बातचीत, विचार-विमर्श और बच्चों की गतिविधियाँ भी होती हैं।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण सही है। लेखक स्पष्ट करता है कि केवल पुस्तक खरीदने के लिए दर्जनों वेबसाइटें उपलब्ध हैं, जो घर बैठे पुस्तकें पहुँचा देती हैं। इसलिए कारण का तथ्य गद्यांश से प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित होता है।

चरण 3: कथन और कारण का संबंध कारण भी सही है, क्योंकि पाठ में घर बैठे पुस्तक पहुँचाने वाली दर्जनों वेबसाइटों का उल्लेख है। केवल खरीदारी के लिए ये वेबसाइटें उपलब्ध हैं; इसलिए मेले की विशिष्टता खरीद-बिक्री से आगे पुस्तकों का सजीव अनुभव है। पाठ में यही कारण देकर मेले को केवल बाजार मानने से इनकार किया गया है। अतः (A) और (B) में सत्यता का निर्णय गलत है तथा (C) में व्याख्या का संबंध नकारना अनुचित है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के संकेत शब्द को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाकर निकटतम और पूर्ण अर्थ वाला विकल्प चुनें।

---

3. उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।। [5 अंक]

3(i). 'बोले बचन मनुज अनुसारी' का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) मनुष्य द्वारा बोले जाने योग्य वचन
(B) मनुष्य द्वारा अनुसरण करने योग्य वचन
(C) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन
(D) मानव सुलभ गुणों से युक्त वचन

सही उत्तर: (C) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन

हल:

अवधारणा:

- काव्य में राम अपने मूर्च्छित छोटे भाई को देखकर सामान्य मनुष्य की भाँति दुख व्यक्त करते हैं।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण 'मनुज अनुसारी' का अर्थ मनुष्य की प्रकृति के अनुरूप है। राम का अनुज को हृदय से लगाना, व्याकुल होना और उससे उठने की प्रार्थना करना स्वाभाविक मानवीय शोक दिखाता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) केवल बोलने की योग्यता और (B) अनुकरण करने की योग्यता बताते हैं; यहाँ ऐसा निर्देश नहीं है। (D) मानव-सुलभ गुणों का सामान्य उल्लेख है, जबकि पंक्ति विशेष रूप से मानव-स्वभाव के अनुरूप शोकपूर्ण वचन कहने का संकेत करती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन।

त्वरित सुझाव: 'अनुसारी' का अर्थ प्रसंग में 'अनुरूप' रखकर वाक्य का आशय जाँचें।

3(ii). 'सकहु न दुखित ..... मृदुल सुभाऊ' चौपाई के आधार पर लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ हैं – [1 अंक]

(A) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी

(B) मृदुल, आज्ञाकारी, कोमलचित्त

(C) कोमल, स्नेही, आज्ञाकारी

(D) कोमल, उदार, सहनशील

सही उत्तर: (A) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी

हल:

अवधारणा:

- राम कहते हैं कि लक्ष्मण उन्हें कभी दुखी नहीं देख सकते और उनका स्वभाव सदा मृदुल रहा है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण 'सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ' में भाई के दुख के प्रति लक्ष्मण की संवेदना और स्नेह स्पष्ट हैं। 'बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ' उनके कोमल स्वभाव को प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करता है। इन दोनों कथनों से भ्रातृ-प्रेम भी प्रकट होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (B) और (C) में आज्ञाकारिता है, जिसका इस चौपाई में प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है। (D) की उदारता और सहनशीलता भी यहाँ कही नहीं गई हैं। इसलिए उद्धृत चौपाई से सीधे समर्थित तीनों विशेषताएँ केवल (A) में हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी।

त्वरित सुझाव: पूरे चरित्र की जानकारी के बजाय प्रश्न में उद्धृत चौपाई से ही गुण चुनें।

3(iii). 'सो अनुराग कहाँ अब भाई' पंक्ति द्वारा राम लक्ष्मण के हृदय में विद्यमान किस भाव की ओर संकेत कर रहे हैं ? [1 अंक]

(A) बड़े भाई को कभी दुखी न देखने का भाव

(B) सबके प्रति हृदय में विद्यमान कोमलता का भाव

(C) बड़े भाई के प्रति कर्तव्यपालन का भाव

(D) बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव

सही उत्तर: (D) बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव

हल:

अवधारणा:

- अनुराग का आशय स्नेह है; उससे ठीक पहले की पंक्तियाँ इस स्नेह के त्यागपूर्ण स्वरूप को बताती हैं।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण राम स्मरण करते हैं कि लक्ष्मण ने उनके हित के लिए माता-पिता को छोड़ा और वन में शीत, धूप तथा वायु के कष्ट सहे। 'सो अनुराग' उसी निस्वार्थ प्रेम की ओर लौटता है। मूर्च्छित भाई की चुप्पी से व्याकुल राम उस प्रेमपूर्ण प्रत्युत्तर की कामना कर रहे हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) दुख न देखने की भावना तक सीमित है। (B) सबके प्रति कोमलता की बात करता है, जबकि संबोधन राम और लक्ष्मण के संबंध का है। (C) केवल कर्तव्यपालन कहता है; पिछले त्यागों सहित आत्मीय प्रेम को (D) अधिक पूर्ण रूप से व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव।

त्वरित सुझाव: 'सो' जैसे संकेतवाची शब्द का संबंध समझने के लिए उससे पहले की पंक्तियाँ पढ़ें।

3(iv). लक्ष्मण के हृदय में राम के प्रति अगाध प्रेम को व्यक्त करने वाली पंक्ति है – [1 अंक]

(A) अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ .....

(B) सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा .....

(C) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन .....

(D) सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि .....

सही उत्तर: (C) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन .....

हल:

अवधारणा:

- अगाध प्रेम का सबसे सशक्त प्रमाण प्रिय व्यक्ति के लिए स्वेच्छा से किया गया त्याग और सहा गया कष्ट है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण 'मम हित लागि तजेहु पितु माता' में लक्ष्मण का राम के लिए माता-पिता से दूर होना व्यक्त है। अगली पंक्ति वन में सर्दी, धूप और हवा के कष्ट सहने की बात कहती है। इस तरह उक्त पंक्तियाँ लक्ष्मण के प्रेम का ठोस उदाहरण देती हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) राम की चिंता और अनुज को उठाकर हृदय से लगाने का प्रसंग है। (B) लक्ष्मण की कोमलता तथा राम को दुखी न देख पाने का उल्लेख है। (D) राम का व्याकुल प्रश्न है। त्याग के माध्यम से अगाध प्रेम का सबसे स्पष्ट प्रमाण (C) देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन .....।

त्वरित सुझाव: अगाध प्रेम पूछे जाने पर ऐसी पंक्ति चुनें जिसमें प्रेम के लिए किया गया त्याग प्रत्यक्ष हो।

3(v). काव्यांश का केंद्रीय भाव है – [1 अंक]

(A) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना

(B) दुख की स्थिति के प्रभाव का वर्णन करना

(C) राम के निर्मल और उदात्त चरित्र का वर्णन करना

(D) लक्ष्मण द्वारा राम के लिए किए गए त्याग का वर्णन करना

सही उत्तर: (A) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव वह है जिसके अंतर्गत काव्यांश की सभी प्रमुख घटनाएँ और अनुभूतियाँ एक साथ आ जाएँ।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण राम लक्ष्मण को देखकर मनुष्य की भाँति व्याकुल वचन कहते हैं। आधी रात बीतने पर भी हनुमान के न लौटने से उनकी चिंता बढ़ती है। वे अनुज को हृदय से लगाकर उसके स्नेह और त्याग का स्मरण करते हुए उससे उठने की विनती करते हैं। ये सभी बातें राम के विलाप को केंद्र में रखती हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (B) दुख का बहुत सामान्य कथन है। (C) चरित्र की व्यापक विशेषता और (D) लक्ष्मण के त्याग का एक पक्ष बताता है। त्याग का स्मरण भी यहाँ राम के शोक को गहरा करता है, इसलिए संपूर्ण अंश का केंद्रीय भाव (A) है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय किसी एक पंक्ति के बजाय पूरे अंश की प्रमुख अनुभूति देखें।

4. क्या-क्या सामान बाँध लें, जिससे मुझे वहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो सके। ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं, यह आश्वासन भक्तिन के लिए कोई मूल्य नहीं रखता। वह मेरे न जाने की कल्पना से इतनी प्रसन्न नहीं होती, जितनी अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित। भला ऐसा अंधेर हो सकता है। जहाँ मालिक वहाँ नौकर – मालिक को ले जाकर बंद कर देने में इतना अन्याय नहीं; पर नौकर को अकेले मुक्त छोड़ देने में पहाड़ के बराबर अन्याय है। ऐसा अन्याय होने पर भक्तिन को बड़े लाट तक लड़ना पड़ेगा। किसी की माई यदि बड़े लाट तक नहीं लड़ी, तो नहीं लड़ी; पर भक्तिन का तो बिना लड़े काम ही नहीं चल सकता। [5 अंक]

4(i). 'ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं।' पंक्ति में प्रयुक्त 'ऐसी यात्रा' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) तीर्थ यात्रा

(B) जेल यात्रा

(C) अंतिम यात्रा

(D) विदेश यात्रा

सही उत्तर: (B) जेल यात्रा

हल:

अवधारणा:

- किसी अभिव्यक्ति का अर्थ उसके आसपास के वाक्यों और परिस्थिति के आधार पर निश्चित किया जाता है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण गद्यांश में मालिक को 'ले जाकर बंद कर देने' और नौकर को 'अकेले मुक्त छोड़ देने' की बात है। बंदी बनाए जाने पर किसी सेवक को अपनी इच्छा से साथ ले जाने का अधिकार नहीं होता। इन संकेतों से 'ऐसी यात्रा' का अर्थ जेल जाना स्पष्ट होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) तीर्थ यात्रा और (D) विदेश यात्रा में साथ जाना इस प्रकार सर्वथा निषिद्ध नहीं होता। (C) अंतिम यात्रा का अर्थ भी यहाँ नहीं है, क्योंकि सामान बाँधने, बंद करने और मुक्त छोड़ने की बातें कारावास के संदर्भ में हैं। इसीलिए (B) उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — जेल यात्रा।

त्वरित सुझाव: 'बंद' और 'मुक्त' जैसे प्रसंग-सूचक शब्दों से यात्रा का विशिष्ट अर्थ पहचानें।

4(ii). भक्तिन किस बात को अपने लिए अपमान समझती थी ? [1 अंक]

(A) पाक कला में मीन-मेख निकालने को

(B) महादेवी जी की आज्ञा का पालन न करने को

(C) उनकी पसंद का खाना न बना सकने की बात को

(D) कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को

सही उत्तर: (D) कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन सेवा को केवल नौकरी नहीं मानती; महादेवी जी के सुख-दुख में साथ रहना उसके लिए आत्मसम्मान का विषय है।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण पाठ साफ कहता है कि वह 'अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित' होती है। उसका तर्क है कि जहाँ मालिक हो वहाँ नौकर भी हो। महादेवी जी के बंदी होने पर स्वयं मुक्त रहकर उन्हें अकेला छोड़ना उसे अस्वीकार्य लगता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) पाक कला की आलोचना और (C) पसंद का खाना न बना पाना इस अंश की समस्या नहीं हैं। (B) आज्ञापालन न करने की बात भी नहीं कही गई है। अपमान का कारण संकट में साथ न रह पाना है, जिसे (D) सीधे व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को।

त्वरित सुझाव: अपमान का कारण ढूँढ़ते समय गद्यांश के 'साथ न जा सकने' वाले वाक्य से मिलान करें।

4(iii). गद्यांश के संदर्भ में 'अंधेर होना' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) अंधकार होना

(B) बेईमानी होना

(C) अपमान होना

(D) अन्याय होना

सही उत्तर: (D) अन्याय होना

हल:

अवधारणा:

- 'अंधेर होना' मुहावरे का अर्थ अन्याय होना है; यहाँ शब्द का शाब्दिक अर्थ ग्रहण नहीं किया जाएगा।
- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में माँगे गए विशेष अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ के संकेत का विश्लेषण भक्तिन पूछती है कि मालिक को बंद करके नौकर को अकेले स्वतंत्र कैसे छोड़ा जा सकता है। इसके तुरंत बाद कथन में स्वयं 'पहाड़ के बराबर अन्याय' और 'ऐसा अन्याय होने पर' आते हैं। ये शब्द 'अंधेर' के अभिप्राय को स्पष्ट कर देते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) अंधकार होना शाब्दिक अर्थ है, जिसका इस परिस्थिति से संबंध नहीं है। (B) बेईमानी छल या धोखे का संकेत देती है, जिसका यहाँ उल्लेख नहीं है। (C) अपमान भक्तिन की अपनी अनुभूति है; 'अंधेर' द्वारा वह व्यवस्था के अन्यायपूर्ण व्यवहार को कहती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — अन्याय होना।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का अर्थ तय करते समय आगे आए समानार्थी शब्द से उसका मिलान करें।

4(iv). 'क्या-क्या ..... असुविधा न हो सके।' – इस वाक्य से महादेवी जी के प्रति भक्तिन की किस भावना का पता चलता है ? [1 अंक]

(A) निष्ठा और कर्तव्यपरायणता

(B) दृढ़ता और धर्मपरायणता

(C) आत्मीयता और भावुकता

(D) सेवा और तत्परता

सही उत्तर: (D) सेवा और तत्परता

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत भक्तिन सामान बाँधने की चिंता इसलिए करती है कि महादेवी जी को वहाँ कोई असुविधा न हो। उसका ध्यान अपनी परेशानी पर नहीं, स्वामिनी की आवश्यकताओं को पहले से पूरा करने पर है।

चरण 2: सेवा और तत्परता का प्रमाण सामान तैयार करने की बात सेवा की व्यावहारिक तैयारी दिखाती है। इसलिए यहाँ सेवा और तत्परता सबसे प्रत्यक्ष भाव हैं। निष्ठा और कर्तव्यपरायणता उसके व्यापक गुण अवश्य हैं, पर विकल्प (A) इस विशिष्ट तैयारी को उतनी सटीकता से नहीं बताता। (B) में धर्मपरायणता का कोई आधार नहीं है। (C) की आत्मीयता और भावुकता की अपेक्षा वाक्य आवश्यक सुविधाएँ जुटाने की सक्रियता पर केंद्रित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (D) है : सेवा और तत्परता।

त्वरित सुझाव: भाव बताने वाले प्रश्न में पूरे चरित्र के गुणों के बजाय उद्धृत वाक्य की क्रिया पर ध्यान दें।

4(v). भक्तिन बड़े लाट साहब से भी लड़ने को क्यों तैयार है ? [1 अंक]

(A) महादेवी जी को जेल भेजने का आदेश देने के कारण

(B) छोटे-छोटे लड़को को जेल में डालने के कारण

(C) स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डालने के कारण

(D) महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण

सही उत्तर: (D) महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत अंश में भक्तिन मालिक के साथ नौकर के रहने को स्वाभाविक मानती है। महादेवी जी को बंद करके उसे अकेला मुक्त छोड़ना उसके लिए पहाड़ के बराबर अन्याय है।

चरण 2: विरोध का वास्तविक कारण उसका आक्रोश केवल महादेवी जी की गिरफ्तारी पर नहीं, उनसे अलग किए जाने पर है। विकल्प (D) दोनों बातों को साथ रखता है। विकल्प (A) केवल जेल भेजने के आदेश को कारण बनाता है, जिससे अकेले मुक्त रहने का अन्याय छूट जाता है। छोटे लड़कों और स्वतंत्रता सेनानियों को जेल भेजने की बातें इस अंश में उसके विरोध का कारण नहीं हैं; अतः (B) और (C) असंगत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (D) है : महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण।

त्वरित सुझाव: कारण चुनते समय अंश के विरोधसूचक शब्द पर के बाद कही गई मुख्य शिकायत पहचानें।

5(i). यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की की खुशी को भी 'समहाउ इंप्रापर' क्यों अनुभव करते थे ? [1 अंक]

(A) बच्चों ने उन्हें आदर देना बंद कर दिया था।

(B) इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

(C) इससे बच्चों में स्वच्छंदता बढ़ गई थी।

(D) इससे बच्चों की जीवन-शैली आधुनिक हो गई थी।

सही उत्तर: (B) इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत यशोधर बाबू पारंपरिक जीवन-मूल्यों से जुड़े हैं, जबकि उनके बच्चे आधुनिक परिवेश में आगे बढ़ रहे हैं। बच्चों की तरक्की के साथ पारिवारिक निकटता और साझा सोच में अंतर उभरता है।

चरण 2: अनुभूति का मूल कारण उनकी असहजता का मूल अपनों के बीच परायापन अनुभव करना है। विकल्प (B) इसी भावनात्मक दूरी को व्यक्त करता है। (A) आदर पूरी तरह बंद होने का अतिरंजित निष्कर्ष है। (C) केवल स्वच्छंदता और (D) केवल आधुनिक जीवन-शैली का बाहरी परिवर्तन बताते हैं। कहानी में इन बदलावों का गहरा प्रभाव पिता का अपने ही परिवार में अलग पड़ना है। इसलिए प्रश्न के भावात्मक कारण के लिए (B) अधिक उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (B) है : इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

त्वरित सुझाव: समहाउ इंप्रापर को केवल आधुनिक रहन-सहन से न जोड़ें; उसके पीछे परिवार में अनुभव हुई दूरी देखें।

5(ii). यशोधर बाबू की पत्नी आधुनिकाओं-सा आचरण क्यों करने लगी थी ? [1 अंक]

(A) मन में दबी इच्छाओं के कारण

(B) पारिवारिक खुशी के कारण

(C) मातृसुलभ मज़बूरी के कारण

(D) सुविधाजनक होने के कारण

सही उत्तर: (C) मातृसुलभ मज़बूरी के कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत यशोधर बाबू की पत्नी बच्चों के बदलते जीवन के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन स्वीकार करती है। बच्चों के साथ जुड़ाव बनाए रखने की मातृसुलभ विवशता उसके इस आचरण का कारण है।

चरण 2: अन्य कारणों से अंतर विकल्प (C) माँ की भूमिका से पैदा हुई इस मज़बूरी को बताता है। (A) इसे केवल उसकी पुरानी दबी इच्छाओं की पूर्ति मान लेता है, जबकि कथ्य बच्चों से जुड़े दबाव पर बल देता है। (B) सामान्य पारिवारिक खुशी बताता है, विशिष्ट कारण नहीं। (D) सुविधा को आधार बनाता है, पर आधुनिकाओं जैसा आचरण सुविधाजनक होने के कारण नहीं अपनाया गया। अत: मातृत्व और बच्चों के साथ तालमेल का संदर्भ निर्णायक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (C) है : मातृसुलभ मज़बूरी के कारण।

त्वरित सुझाव: पात्र के आचरण का कारण चुनते समय उसके पारिवारिक दायित्व को सामान्य पसंद या सुविधा से अलग करें।

5(iii). यशोधर बाबू ने डी.डी.ए. का फ़्लैट क्यों बुक नहीं किया था ? [1 अंक]

(A) रिटायरमेंट के बाद गाँव में जाकर बसना चाहते थे।

(B) लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

(C) फ़्लैट बुक कराने के लिए पैसे नहीं थे।

(D) योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते थे।

सही उत्तर: (B) लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत यशोधर बाबू को विश्वास था कि उनके लड़कों में से कोई सरकारी नौकरी में आएगा। ऐसी स्थिति में सरकारी आवास की व्यवस्था हो सकेगी; इसी सोच के कारण उन्होंने अपना फ़्लैट बुक कराना आवश्यक नहीं समझा।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण विकल्प (B) उनके निर्णय के पीछे का स्पष्ट विश्वास बताता है। (A) सेवानिवृत्ति के बाद गाँव बसने की योजना को कारण बनाता है और (C) धनाभाव को, जबकि इस प्रसंग में निर्णायक कारण ये नहीं हैं। (D) उनके व्यवहार का सामान्य मूल्यांकन है, फ़्लैट न बुक करने के लिए बताया गया विशिष्ट कारण नहीं। प्रश्न व्यक्त किए गए कारण के विषय में है, इसलिए अनुमानित आलोचना के स्थान पर उनके विश्वास को चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (B) है : लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

त्वरित सुझाव: पात्र के निर्णय पर अपना मूल्यांकन लगाने से पहले पाठ में दिया गया उसका स्पष्ट विश्वास पहचानें।

5(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) किशनदा ने यशोधर बाबू को नौकरी दिलवाई और जीवन में मार्गदर्शन किया।

(II) यशोधर बाबू का दैनिक खर्च नगण्य था इसलिए उनके बटुए में पैसे कम होते थे।

(III) दफ़्तर से लौटते हुए बिड़ला मंदिर जाना उन्होंने किशनदा से सीखा था।

(IV) यशोधर बाबू का मानना था काम तो सब अपने हाथ से ही ठीक रहता है।

'सिल्वर वैडिंग' कहानी के अनुसार उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (II) सही है।

(C) कथन (II) और (III) सही हैं।

(D) कथन (I), (II), (III) और (IV) सही हैं।

सही उत्तर: कथन (I) और (IV) सही हैं; दिए गए विकल्पों में यह संयोजन उपलब्ध नहीं है।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत किशनदा ने यशोधर बाबू को नौकरी दिलवाई और दफ़्तरी जीवन में मार्गदर्शन दिया था, अत: कथन (I) सही है। कथन (II) गलत है: दैनिक खर्च नगण्य होने के बावजूद वे बटुए में सौ-डेढ़ सौ रुपये हमेशा रखते थे। कम खर्च से कम पैसे रखने का निष्कर्ष पाठ के विपरीत है।

चरण 2: शेष कथनों और विकल्पों की जाँच बिड़ला मंदिर जाने की आदत यशोधर बाबू ने बाद में विकसित की थी; इसे किशनदा से सीखा हुआ बताना सही नहीं है, इसलिए (III) गलत है। वे नौकर पर निर्भरता के प्रसंग में अपना काम अपने हाथ से ठीक होने की बात कहते हैं; इसलिए (IV) सही है। फलतः (I) और (IV) का संयोजन चाहिए। (A) केवल (I) बताकर सही कथन (IV) छोड़ देता है। (B) और (C) गलत कथन (II) को सही मानते हैं तथा (D) सभी को सही कहता है। कोई मुद्रित विकल्प पूरा सही संयोजन नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष कथन (I) और (IV) सही हैं। इनके अनुरूप कोई विकल्प नहीं दिया गया है; अतः उपलब्ध विकल्पों में कोई पूर्णतः सही उत्तर नहीं है।

त्वरित सुझाव: कथन-समूह के प्रश्न में विकल्प से प्रभावित हुए बिना हर कथन जाँचें; सही संयोजन अनुपस्थित भी हो सकता है।

5(ix). मुअनजो-दड़ो की खुदाई में मिले कोठार का उपयोग अनाज संग्रह के लिए किया जाता होगा। इस विश्वास का आधार है – [1 अंक]

(A) कोठार का वास्तुशिल्प

(B) संग्रहालय में मिले गेहूँ के दाने

(C) बैलगाड़ी के साक्ष्य

(D) पत्थर के औजार

सही उत्तर: (A) कोठार का वास्तुशिल्प

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग और दिए गए विकल्पों का संबंध देखकर सबसे सटीक उत्तर चुना जाता है।
- व्यापक अनुमान की अपेक्षा पाठ में व्यक्त कारण या व्यवहार का ठोस संकेत निर्णायक होता है।

चरण 1: प्रसंग में निर्णायक संकेत पाठ में कोठार के निर्माण-रूप, विशेषकर चौकियों और हवादारी की व्यवस्था को देखकर अनाज संग्रह का अनुमान लगाया गया है। भंडार में अनाज सुरक्षित रखने के अनुकूल बनावट ही इस विश्वास का आधार है।

चरण 2: प्रत्यक्ष और सामान्य साक्ष्य का अंतर विकल्प (A) का वास्तुशिल्प इसी निर्माण-रूप को व्यक्त करता है। नौ-नौ चौकियों की तीन कतारें और हवा आने-जाने की व्यवस्था भवन के उपयोग का संकेत देती हैं। (B) के गेहूँ के दाने कृषि की जानकारी दे सकते हैं, पर इस कोठार के उपयोग के लिए पाठ में दिया गया आधार वे नहीं हैं। (C) की बैलगाड़ियों के प्रमाण ढुलाई की संभावना समझाते हैं, भवन के भंडार होने का मुख्य आधार नहीं। (D) के पत्थर के औजार भी अनाज रखने के उपयोग का विशिष्ट प्रमाण नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (A) है : कोठार का वास्तुशिल्प।

त्वरित सुझाव: भवन के उपयोग का अनुमान पूछे जाने पर पाठ में उसकी बनावट और व्यवस्था से निकाले गए निष्कर्ष पहचानें।

5(v). "अब तू ही बता, मैं का करूँ ?" – इस कथन से आनंदा की माँ के चरित्र की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है ? [1 अंक]

(A) विवशता

(B) दुर्बलता

(C) अक्षमता

(D) परवशता

सही उत्तर: (A) विवशता

हल:

अवधारणा:

- चरित्र का निर्धारण पात्र के कथन और उसकी परिस्थितियों से किया जाता है।
- सहायता के लिए किया गया प्रश्न समस्या के सामने असहाय स्थिति को व्यक्त कर सकता है।

चरण 1: कथन का प्रसंग समझें आनंदा पढ़ना चाहता है, किंतु उसके पिता उसकी पढ़ाई के पक्ष में नहीं हैं। माँ उसकी इच्छा समझती है, पर पिता का निर्णय स्वयं बदलवाने की स्थिति में नहीं है। इसीलिए वह पूछती है कि अब वह क्या करे।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें इस कथन का केंद्रीय भाव परिस्थितियों से उत्पन्न विवशता है। दुर्बलता सामान्य कमजोरी और अक्षमता योग्यता के अभाव को बताती है; यहाँ माँ की योग्यता पर प्रश्न नहीं है। परवशता दूसरे के अधीन होने का भाव है, जबकि इस प्रश्न में उपाय न सूझने और कुछ न कर पाने की विवशता अधिक सीधे प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा की माँ के चरित्र की विवशता प्रकट होती है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पात्र का गुण चुनते समय उसके पूरे व्यक्तित्व के बजाय दिए गए कथन का तत्काल भाव देखें।

5(vi). आनंदा के पिता ने उसे पाठशाला भेजने के लिए कौन-सी शर्त नहीं रखी ? [1 अंक]

(A) सुबह खेतों में पानी लगाना

(B) स्कूल से आकर ढोर चराना

(C) सुबह शाम गाय-भैंस दुहना

(D) अधिक काम होने पर स्कूल से छुट्टी लेना

सही उत्तर: (C) सुबह शाम गाय-भैंस दुहना

हल:

अवधारणा:

- नकारात्मक प्रश्न में वह विकल्प चुनना होता है जिसका उल्लेख शर्तों में नहीं है।
- पाठ में खेती के काम और पढ़ाई के बीच आनंदा का संघर्ष प्रमुख है।

चरण 1: वास्तविक शर्तों को पहचानें पिता ने पढ़ाई की अनुमति खेती और पशुओं की जिम्मेदारियाँ निभाने की शर्त पर दी थी। आनंदा को सुबह खेत में पानी लगाना था, स्कूल के बाद ढोर चराने थे और अधिक काम होने पर स्कूल से छुट्टी भी लेनी थी।

चरण 2: जो शर्त नहीं रखी गई, उसे चुनें सुबह-शाम गाय-भैंस दुहना पिता की इन शर्तों में शामिल नहीं है। इसलिए (C) प्रश्न के नकारात्मक निर्देश के अनुरूप है। (A), (B) और (D) वास्तविक शर्तों को बताते हैं, अतः उन्हें चुनने से प्रश्न का आशय उलट जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष सुबह-शाम गाय-भैंस दुहने की शर्त नहीं रखी गई थी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में 'नहीं' शब्द को पहले पहचानें, फिर पाठ की वास्तविक शर्तों से हर विकल्प मिलाएँ।

5(vii). 'उस चक्की की अपेक्षा मास्टर की छड़ी की मार अच्छी लगती थी।' – इस वाक्य में किस चक्की की ओर संकेत किया गया है ? [1 अंक]

(A) खेती के काम की चक्की

(B) आटा पीसने की चक्की

(C) घर के काम की चक्की

(D) कोल्हू से रस निकालने की चक्की

सही उत्तर: (A) खेती के काम की चक्की

हल:

अवधारणा:

- रूपक में किसी वस्तु का नाम दूसरी परिस्थिति की प्रकृति समझाने के लिए प्रयुक्त होता है।
- चक्की यहाँ अंतहीन श्रम और एकरसता का बोध कराती है।

चरण 1: चक्की का संकेत समझें आनंदा के जीवन में खेती का काम निरंतर श्रम और पढ़ाई से दूरी का कारण था। उसे उसी काम में लगातार जुटे रहना पड़ता था। इस श्रमपूर्ण जीवन को वह चक्की की तरह अनुभव करता है, जिससे निकलकर पाठशाला जाना चाहता है।

चरण 2: तुलना और विकल्प स्पष्ट करें मास्टर की छड़ी की मार भी उसे खेती के कठोर काम से बेहतर लगती थी, क्योंकि विद्यालय में शिक्षा पाने का अवसर था। इसलिए (A) उचित है। यहाँ आटा पीसने की वास्तविक चक्की, सामान्य घरेलू कार्य या कोल्हू से रस निकालने की प्रक्रिया का संकेत नहीं है; अतः (B), (C) और (D) अनुपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चक्की से खेती के काम की चक्की का संकेत है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ निकालते समय पात्र के मुख्य संघर्ष को पहचानें और शाब्दिक अर्थ से बचें।

5(viii). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के संदर्भ में निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन : देखना अपनी आँख से देखना है। बाकी सब आँख का झपकना है।
कारण : यथार्थ का अनुभव स्वयं किया जा सकता है, कहना-सुनना केवल दिखावा मात्र है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में दोनों की सत्यता और उनका व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग जाँचा जाता है।
- यहाँ अपनी आँख से देखना प्रत्यक्ष अनुभव का प्रतीक है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें कथन प्रत्यक्ष देखने की महत्ता स्थापित करता है। किसी स्थान या उसके अवशेषों को स्वयं देखकर जो अनुभूति होती है, वह केवल उनके बारे में सुनने से नहीं होती। इसी अर्थ में कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें दिए गए कारण का आशय भी यही है कि यथार्थ का वास्तविक अनुभव स्वयं संपर्क में आने पर होता है। यहाँ कहना-सुनना उस प्रत्यक्ष अनुभव की तुलना में गौण है; 'दिखावा' इसी तुलना की तीव्र अभिव्यक्ति है। इस संदर्भ में कारण सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प जाँचें कारण बताता है कि अपनी आँख से देखने को इतना महत्त्व क्यों दिया गया है। इसलिए

वह कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) किसी एक को गलत बताते हैं तथा (C) उनके स्पष्ट संबंध को नकारता है; तीनों अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सही हों तो जाँचें कि कारण सीधे 'क्यों' का उत्तर देता है या केवल संबंधित बात कहता है।

5(x). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ से उद्धृत 'रेगिस्तान के जहाज से हवा के जहाज का यह ऐतिहासिक गठजोड़ है।' – कथन का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग

(B) राजस्थान तक हवाई-यात्रा का प्रबंध

(C) ऊँटगाड़े का सड़कों पर हवा की तरह दौड़ना

(D) ऊँटगाड़े में हवा वाले पहियों का प्रयोग

सही उत्तर: (A) ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग

हल:

अवधारणा:

- आलंकारिक कथन में प्रयुक्त संकेतों को पाठ के वर्णित दृश्य से जोड़ना चाहिए।
- रेगिस्तान का जहाज ऊँट तथा हवा का जहाज विमान का संकेत है।

चरण 1: दोनों जहाजों के संकेत खोलें लेखक ऊँटगाड़े में हवाई जहाज के उतारे हुए पहियों के उपयोग को देखता है। ऊँट रेगिस्तान का जहाज कहलाता है और विमान हवा का जहाज है। इन दोनों से संबंधित वस्तुओं का एक वाहन में मिल जाना इस कथन का आधार है।

चरण 2: विकल्पों में सटीक आशय पहचानें (A) विमान के उतारे हुए पहियों का ऊँटगाड़े में प्रयोग बताता है, इसलिए वही सटीक है। (B) राजस्थान की हवाई यात्रा और (C) ऊँटगाड़े की गति की बात करते हैं, जो इस दृश्य का आशय नहीं हैं। (D) केवल हवा भरे पहियों का उल्लेख करता है; वह पहियों के विमान से आए होने की विशेष बात नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष अभिप्राय ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: आलंकारिक वाक्य में दोनों संकेतों को खोलें; केवल सामान्य समानता बताने वाला विकल्प न चुनें।

6(i). रमेश को हिन्दी भाषा के शब्दों को समझने में कठिनाई का अनुभव होता है इसीलिए संचार के निम्नलिखित माध्यमों में से उसके लिए कौन-सा माध्यम उपयुक्त रहेगा ? [1 अंक]

(A) टी.वी.

(B) समाचार-पत्र

(C) रेडियो

(D) सिनेमा

सही उत्तर: (A) टी.वी.

हल:

अवधारणा:

- माध्यम का चुनाव ग्रहणकर्ता की समझ और माध्यम की प्रस्तुति के आधार पर किया जाता है।
- टेलीविजन में दृश्य, ध्वनि और हावभाव मिलकर सूचना को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: रमेश की कठिनाई पहचानें रमेश को हिन्दी के शब्द समझने में कठिनाई होती है। उसके लिए ऐसा माध्यम उपयोगी होगा जिसमें शब्दों के साथ दृश्य संकेत भी मिलें, ताकि वह घटना, क्रिया और स्थिति देखकर संदेश का आशय समझ सके। टेलीविजन यह सहायता देता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें समाचार-पत्र में लिखित शब्द समझने पड़ते हैं और रेडियो में केवल सुनाई देने वाली भाषा पर निर्भरता रहती है। सिनेमा भी दृश्य-श्रव्य है, किंतु सामान्य और नियमित सूचना-संचार के लिए यहाँ टेलीविजन अधिक उपयुक्त विकल्प है। उसके चित्र भाषा की कठिनाई कम करने में सीधे सहायक होते हैं। इसलिए (A) को चुनेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष रमेश के लिए टी.वी. उपयुक्त माध्यम रहेगा। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: भाषा समझने में कठिनाई हो तो ऐसे माध्यम को प्राथमिकता दें जिसमें चित्र संदेश समझने में मदद करें।

6(ii). टी.वी. पर एंकर द्वारा रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर सूचनाएँ देना कहलाता है – [1 अंक]

(A) ब्रेकिंग न्यूज

(B) ड्राई एंकर

(C) लाइव

(D) एंकर पैकेज

सही उत्तर: (B) ड्राई एंकर

हल:

अवधारणा:

- ड्राई एंकर में एंकर उपलब्ध जानकारी के आधार पर स्वयं समाचार पढ़ता है।
- समाचार प्रस्तुति के प्रकार को पहचानने के लिए चित्रों, सीधे प्रसारण और पैकेज की भूमिका देखी जाती है।

चरण 1: दी गई प्रस्तुति पहचानें प्रश्न में एंकर रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर दर्शकों को सूचना दे रहा है। यहाँ रिपोर्टर की सीधी भागीदारी, घटनास्थल का सीधा प्रसारण या तैयार दृश्य-श्रव्य रिपोर्ट का उल्लेख नहीं है। ऐसी प्रस्तुति ड्राई एंकर कहलाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर समझें ब्रेकिंग न्यूज किसी ताजा और महत्त्वपूर्ण खबर की तत्काल सूचना है; केवल दी गई प्रक्रिया से वह सिद्ध नहीं होती। लाइव में घटनास्थल से सीधा प्रसारण होता है। एंकर पैकेज में तैयार रिपोर्ट तथा संबंधित दृश्य-श्रव्य सामग्री जुड़ती है। इसलिए (A), (C) और (D) इस विवरण की सटीक संज्ञाएँ नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह प्रस्तुति ड्राई एंकर कहलाती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: केवल एंकर सूचना पढ़े और दृश्य रिपोर्ट या सीधा प्रसारण न बताया गया हो तो ड्राई एंकर पहचानें।

6(iii). किसी भी क्षेत्र में हो रहे भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए तैयार की गई रिपोर्ट कहलाएगी – [1 अंक]

(A) खोजी रिपोर्ट

(B) इन-डेप्थ रिपोर्ट

(C) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

(D) विवरणात्मक रिपोर्ट

सही उत्तर: (A) खोजी रिपोर्ट

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता का उद्देश्य छिपाए जा रहे तथ्यों की पड़ताल करके भ्रष्टाचार और अनियमितताओं को प्रमाण सहित सामने लाना है।
- रिपोर्ट का प्रकार उसके उद्देश्य से पहचाना जाता है; केवल विस्तार या वर्णन होना खोजी रिपोर्ट की पहचान नहीं है।

चरण 1: प्रश्न में दिया उद्देश्य पहचानना यहाँ किसी क्षेत्र की सामान्य जानकारी देना नहीं, बल्कि वहाँ हो रही गड़बड़ियों को उजागर करना मुख्य उद्देश्य है। छिपे तथ्यों और अनियमितताओं का पता लगाना खोजी रिपोर्ट का विशिष्ट कार्य है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर करना इन-डेप्थ रिपोर्ट किसी विषय की गहराई से छानबीन और विस्तृत जानकारी देती है। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तथ्यों के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण करती है। विवरणात्मक रिपोर्ट घटना का विवरण देती है। इनकी तुलना में प्रश्न के भ्रष्टाचार उजागर करने वाले उद्देश्य का सटीक नाम खोजी रिपोर्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है — खोजी रिपोर्ट।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में छिपे भ्रष्टाचार या गड़बड़ी को उजागर करने का लक्ष्य हो तो खोजी रिपोर्ट पहचानिए।

6(iv). उलटा पिरामिड शैली की लोकप्रियता के संदर्भ में कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं, उचित विकल्प चुनकर लिखिए :

(I) समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है।

(II) इस शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना पिरामिड के निचले हिस्से में होती है।

(III) लेखन और संपादन की सुविधा के कारण यह समाचार लेखन की मानक शैली है।

(IV) इस शैली का आरम्भ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुआ। [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (IV) सही है।

(C) कथन (I) और (III) सही हैं।

(D) कथन (I) और (II) सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन (I) और (III) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड शैली में समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आरंभ में आता है और उसके बाद घटते महत्त्व के क्रम में विवरण दिए जाते हैं।
- इस क्रम से पाठक को मुख्य सूचना तुरंत मिलती है और संपादक अंत का कम महत्त्वपूर्ण अंश आसानी से हटा सकता है।

चरण 1: पहले तीन कथनों की जाँच कथन (I) सही है क्योंकि यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। कथन (II) गलत है; सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना नीचे नहीं, सबसे पहले दी जाती है। कथन (III) सही है क्योंकि मुख्य सूचना आरंभ में होने से लेखन और संपादन सुविधाजनक होते हैं।

चरण 2: चौथे कथन तथा विकल्पों की जाँच कथन (IV) गलत है; इस शैली का संबंध अमेरिकी गृहयुद्ध के समय के समाचार प्रेषण से है, द्वितीय विश्वयुद्ध से नहीं। इसलिए केवल (I) वाला (A) अधूरा, (IV) वाला (B) गलत और (II) को सही मानने वाला (D) भी गलत है। (I) तथा (III) का सही संयोजन (C) में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है — कथन (I) और (III) सही हैं।

त्वरित सुझाव: उलटा पिरामिड में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना सबसे पहले रखें; इसी नियम से कथन (II) हट जाता है।

6(v). दृश्यों के साथ खबर लिखने की बुनियादी शर्त किस माध्यम में है ? [1 अंक]

(A) समाचार-पत्र

(B) टेलीविजन

(C) रेडियो

(D) इंटरनेट

सही उत्तर: (B) टेलीविजन

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग करता है; इसलिए समाचार का लेखन उपलब्ध दृश्यों के अनुरूप किया जाता है।
- टेलीविजन में शब्द दृश्य को स्पष्ट करते हैं और दर्शक को घटना का अर्थ समझने में सहायता देते हैं।

चरण 1: माध्यम की बुनियादी आवश्यकता पहचानना दृश्यों के साथ खबर लिखने का अर्थ है कि समाचार के शब्द और स्क्रीन पर दिखाई देने वाले दृश्य परस्पर जुड़े हों। यह टेलीविजन समाचार की बुनियादी शर्त है, क्योंकि दर्शक खबर को देखते और सुनते हुए ग्रहण करता है।

चरण 2: शेष विकल्पों का परीक्षण समाचार-पत्र में मुद्रित शब्द प्रधान होते हैं; चित्र हर खबर की अनिवार्य शर्त नहीं हैं। रेडियो में दृश्य दिखाए ही नहीं जा सकते, इसलिए वह श्रव्य माध्यम है। इंटरनेट पर केवल पाठ, ध्वनि या वीडियो जैसे विभिन्न रूप संभव हैं; हर खबर दृश्यों के साथ लिखना अनिवार्य नहीं है। अतः इन विकल्पों की अपेक्षा टेलीविजन सटीक उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है — टेलीविजन।

त्वरित सुझाव: दृश्य और बोले गए शब्दों के अनिवार्य तालमेल का संकेत मिले तो टेलीविजन समाचार चुनिए।

7(क). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'मैं फूट पड़ा तुम कहते छंद बनाना' – 'आत्मपरिचय' कविता से ली गई इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता आत्मपरिचय में कवि अपनी आंतरिक अनुभूति और संसार की बाहरी दृष्टि के अंतर को प्रकट करता है।
- फूट पड़ना भावनाओं के तीव्र, स्वतःस्फूर्त उद्गार का संकेत है; छंद बनाना उसी अभिव्यक्ति का कलात्मक रूप है।

चरण 1: कवि की अनुभूति समझना कवि की दृष्टि में कविता केवल सोच-समझकर छंद जोड़ने की क्रिया नहीं है। उसके हृदय में संचित पीड़ा, संवेदना और भावावेग जब रोकने पर भी नहीं रुकते, तब शब्दों के रूप में बाहर आते हैं। इसलिए वह अपनी रचना को भीतर का फूट पड़ना कहता है। यह भाव की तीव्रता और अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता दर्शाता है।

चरण 2: पाठक की दृष्टि का अंतर पहचानना संसार उसी उद्गार में छंद, लय और काव्य का सौंदर्य देखता है। वह उसे छंद बनाना कहता है। पंक्ति में कवि अपनी अनुभूत वेदना और पाठक द्वारा देखे गए कलात्मक रूप का अंतर सामने रखता है। इसका आशय छंद का निषेध

नहीं, बल्कि कविता की जड़ में उपस्थित सच्ची अनुभूति को महत्त्व देना है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में कवि कहता है कि उसकी कविता हृदय के संचित भावों और वेदना का सहज विस्फोट है। भीतर की अनुभूतियाँ जब अनायास शब्दों में फूट पड़ती हैं, तो लोग उसे छंद रचना मान लेते हैं। संसार कविता का कलात्मक रूप देखता है, जबकि कवि उसमें अपनी पीड़ा और संवेदनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति अनुभव करता है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि कवि का सहज भावोद्गार संसार को कलात्मक छंद रचना के रूप में दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: फूट पड़ना को सहज भावावेग और छंद बनाना को संसार की दृष्टि से जोड़कर दोनों पक्ष स्पष्ट कीजिए।

7(ख). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'कविता के बहाने' कविता से ली गई पंक्ति 'सब घर एक कर देने के माने' – का आशय कविता और बच्चों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता कविता के बहाने में कविता और बच्चों की कल्पना सीमाओं से मुक्त सृजनशीलता का रूप है।
- सब घर एक कर देना भेदभाव और अलगाव को मिटाकर अपनत्व तथा व्यापक मानवीय एकता स्थापित करने का संकेत है।

चरण 1: बच्चों के संदर्भ में अर्थ समझना बच्चे खेलते समय अपने और पराए घर की दीवारों को निर्णायक नहीं मानते। उनका सहज मेल-जोल संकीर्ण भेदों से मुक्त होता है। वे खेल और आत्मीयता में अलग-अलग घरों को जैसे एक साझा संसार बना देते हैं। यहाँ घरों को भौतिक रूप से जोड़ना नहीं, अपनत्व की सीमाएँ बढ़ाना अभिप्रेत है।

चरण 2: कविता के संदर्भ में अर्थ समझना कविता भी बालमन की तरह किसी सीमित दायरे में बँधकर नहीं रहती। उसकी कल्पना और संवेदना अलग-अलग मनुष्यों तथा अनुभवों के बीच संबंध बनाती है। वह अपने-पराए और सामाजिक विभाजनों से ऊपर उठकर साझा मानवीय अनुभूति जगाती है। इसी कारण बच्चों और कविता दोनों के साथ घरों को एक कर देने की बात कही गई है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर सब घर एक कर देने का आशय भेदभाव की सीमाएँ मिटाकर सबको आत्मीयता से जोड़ना है। बच्चे खेल में अपने-पराए घर का भेद नहीं रखते और सहज मेल-जोल से सबको अपना बना लेते हैं। इसी प्रकार कविता की कल्पना और संवेदना भी संकीर्ण सीमाएँ पार करती हैं। वह मनुष्यों को साझा भावभूमि पर लाकर एकता और अपनत्व का अनुभव कराती है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चे अपने खेल से और कविता अपनी व्यापक संवेदना से अलगाव मिटाकर सबको आत्मीय संबंध में जोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बच्चों का सहज मेल-जोल और कविता की सीमा-मुक्त मानवीय संवेदना अलग-अलग स्पष्ट करके दोनों को जोड़िए।

7(ग). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर लिखिए कि 'कील की तरह ठोकना' का क्या अर्थ है ? कवि ने अपनी बात को कील की तरह क्यों ठोक दिया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में कथ्य और भाषा का स्वाभाविक संबंध महत्त्वपूर्ण है। अनावश्यक भाषिक सजावट सरल बात को भी उलझा सकती है।
- कील ठोकने का बिंब सहज अभिव्यक्ति के स्थान पर बलपूर्वक बात स्थापित करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

चरण 1: बिंब का अर्थ समझिए कील को हथौड़े के प्रहार से किसी सतह में गाड़ा जाता है। इसी प्रकार बात को कील की तरह ठोकने का अर्थ है उसे सहज संप्रेषण के स्थान पर जबरन प्रस्तुत या स्थापित कर देना। यहाँ कील वास्तविक वस्तु नहीं, अभिव्यक्ति की जड़ता

का बिंब है।

चरण 2: कवि की स्थिति स्पष्ट कीजिए कवि की बात सीधी थी, लेकिन भाषा के चक्कर में पड़कर टेढ़ी हो गई। भाषा को अधिक प्रभावशाली बनाने के प्रयत्न में वह उसके साथ उलझता गया। कथ्य और भाषा की स्वाभाविक संगति बिगड़ने पर उसने बात को बलपूर्वक व्यक्त कर दिया। ऐसी अभिव्यक्ति में मूल बात की सहजता और प्रभाव नष्ट हो जाते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर 'कील की तरह ठोकना' का अर्थ है बात को सहज ढंग से व्यक्त करने के बजाय जबरन स्थापित करना। कवि की सीधी बात भाषा के चक्कर में टेढ़ी हो गई थी। उसे सँवारने के प्रयास में भाषा और कथ्य का मेल बिगड़ गया। इसलिए कवि ने उसे बलपूर्वक व्यक्त कर दिया; इससे बात की स्वाभाविकता और मूल प्रभाव समाप्त हो गया।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने भाषा की उलझन के कारण अपनी सरल बात को बलपूर्वक व्यक्त किया; कील का बिंब इसी असहजता को प्रकट करता है।

त्वरित सुझाव: कील के बिंब को वास्तविक ठोकने से न जोड़ें; भाषा में उलझकर अभिव्यक्ति की सहजता खोने से जोड़ें।

8(क). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में मीडियाकर्मियों को धुर संवेदनहीन व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, क्या वास्तव में हमारा समाज इतना ही संवेदनहीन हो गया है, या उसका कोई उज्ज्वल पक्ष भी है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता पीड़ा को प्रदर्शन और कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाने वाली मानसिकता पर व्यंग्य करती है।
- समाज पर निर्णय देते समय शोषण की प्रवृत्ति और सेवा के उदाहरणों में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: कविता में आलोचना का आधार कार्यक्रम बनाने वाले व्यक्ति अपाहिज की पीड़ा समझने के बजाय उसे कैमरे के सामने रुलाना चाहते हैं। उनकी चिंता उसके सम्मान से अधिक दर्शकों पर पड़ने वाले प्रभाव की है। कविता इसी संवेदनहीन दृष्टि का विरोध करती है। इस आधार पर उत्तर में संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है। कविता किसी व्यक्ति की असहायता को मनोरंजन में बदलने की निंदा करती है और पाठक को उसकी गरिमा का सम्मान करने की प्रेरणा देती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर समूचा समाज संवेदनहीन नहीं है। कविता में मीडियाकर्मी अपाहिज की पीड़ा को प्रदर्शन बनाते हैं, किंतु समाज में निःस्वार्थ सेवा, दिव्यांगों की सहायता और उनके अधिकारों के लिए काम करने वाले लोग भी हैं। यही करुणा और सहयोग उसका उज्ज्वल पक्ष है।

चरण 3: निष्कर्ष पीड़ा का बाजारीकरण आलोचना का विषय है; करुणा और सेवा समाज के उज्ज्वल पक्ष को प्रमाणित करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कविता की आलोचना के साथ सेवा का ठोस पक्ष जोड़ें; सारे समाज को एक जैसा न मानें।

8(ख). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'बादल राग' कविता के आधार पर लिखिए कि विप्लवी बादल की युद्ध रूपी नौका में क्या-क्या भरा हुआ है ? इसकी क्या विशेषता है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल शोषित जनों की आशा और परिवर्तनकारी क्रांति का प्रतीक है।
- रण की तरी का बिंब संघर्ष तथा विनाश के भीतर नई सृष्टि की संभावनाओं को जोड़ता है।

चरण 1: युद्ध की नौका का आशय कवि बादल को युद्ध की नौका के रूप में देखता है। उसमें आकांक्षाएँ भरी हैं। ये आकांक्षाएँ दुख और शोषण से मुक्ति तथा नए जीवन की आशाओं से जुड़ी हैं। बादल का गर्जन परिवर्तन का संदेश देता है। अंकुरों का धरती में छिपा होना उनकी निष्क्रियता का स्थायी प्रमाण नहीं है। बादल का आह्वान उनमें जीवन जगाता है। इस प्रकार उसका भीषण रूप उत्पीड़कों के लिए भयावह है, जबकि पीड़ितों के लिए वही परिवर्तन आशा का स्रोत बनता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर विप्लवी बादल की युद्ध रूपी नौका में आकांक्षाएँ भरी हुई हैं। उसकी विशेषता यह है कि वह विनाश और संघर्ष के बीच भी नई सृष्टि की संभावना सँजोए है। बादल का गर्जन सुप्त अंकुरों को जगाकर शोषित जनों में नवजीवन की आशा भरता है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल की रणतरी आकांक्षाओं से भरी है और संघर्ष के माध्यम से नए जीवन का मार्ग खोलती है।

त्वरित सुझाव: रणतरी में भरी वस्तु के रूप में आकांक्षाएँ लिखें और विशेषता में विनाश के बीच सृजन की संभावना बताएँ।

8(ग). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'रुबाइयाँ' शीर्षक से ली गई 'घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े' – पंक्ति के आधार पर माँ की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फिराक की रुबाइयों में घरेलू जीवन और माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध का सहज चित्रण है।
- माँ के कार्यों से उसके वात्सल्य, सावधानी और बच्चे को सँवारने की इच्छा का परिचय मिलता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझिए माँ बच्चे को नहलाती है, उसके उलझे बाल सँवारती है और अपने घुटनों के बीच लेकर उसे कपड़े पहनाती है। इस घरेलू दृश्य में बच्चे के शरीर को सँभालने और उसे सुंदर बनाने की आत्मीय लगन दिखाई देती है। घुटनों के बीच बच्चे को लेने में कठोरता नहीं, उसे टिकाकर सुरक्षित रखने का भाव है। इस क्रिया में माँ की व्यावहारिक कुशलता और उसके निःस्वार्थ दुलार का सुंदर समन्वय मिलता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में माँ स्नेहमयी, ममतामयी और सजग दिखाई देती है। वह बच्चे को नहलाकर उसके बाल सँवारती है तथा घुटनों के बीच सँभालकर कपड़े पहनाती है। उसके व्यवहार में बच्चे की सुविधा, सुरक्षा और सुंदरता के प्रति कोमल प्रेम तथा धैर्य प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चे को सँभालकर कपड़े पहनाने का दृश्य माँ के वात्सल्य, सावधानी और धैर्य को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: माँ के गुण लिखते समय उन्हें नहलाने, बाल सँवारने और कपड़े पहनाने की क्रियाओं से प्रमाणित करें।

9(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
"मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार भी फैला का फैला ही रह जाएगा।" 'बाजार दर्शन' पाठ के संदर्भ में इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में बाज़ार का आकर्षण तभी प्रभाव डालता है जब मन अपनी आवश्यकता के विषय में अनिश्चित हो।
- निश्चित लक्ष्य और आत्मसंयम व्यक्ति को अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने से बचाते हैं।

चरण 1: कथन का संदर्भ समझें जैनेंद्र कुमार बाज़ार के जादू और उपभोक्ता की मनःस्थिति का संबंध बताते हैं। खाली मन वाला व्यक्ति चकाचौंध से प्रभावित होकर ऐसी वस्तुएँ भी खरीद लेता है जिनकी उसे जरूरत नहीं होती। यहाँ लक्ष्य से भरा मन अपनी वास्तविक जरूरत

पहचानने वाले व्यक्ति का संकेत है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें जब खरीदारी का उद्देश्य निश्चित हो तो वस्तुओं का विस्तार और सजावट निर्णय को नहीं बदलते। व्यक्ति उपयोगी वस्तु चुनकर लौट आता है। भगत जी इसी विवेक के उदाहरण हैं; बाज़ार का आकर्षण उनकी निश्चित आवश्यकता पर हावी नहीं होता। इस प्रकार कथन का केंद्र बाज़ार को बंद करना नहीं, अपने मन को नियंत्रित रखना है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस कथन का आशय है कि अपनी वास्तविक आवश्यकता का स्पष्ट ज्ञान रखने वाला व्यक्ति बाज़ार की चकाचौंध से नहीं बहकता। उसका लक्ष्य उसे अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने से रोकता है। भगत जी की तरह वह जरूरत की वस्तु लेकर लौट आता है। इसलिए बाज़ार का सारा आकर्षण उसके सामने निष्प्रभावी रहता है; संयम और विवेक उसे उपभोक्तावादी प्रलोभन से बचाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष निश्चित आवश्यकता से भरा मन बाज़ार के प्रलोभन को निष्प्रभावी कर देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खाली मन और लक्ष्ययुक्त मन का अंतर बताकर भगत जी का उदाहरण जोड़ें।

9(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक ने लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व को पानी के संदर्भ में किस प्रकार रचा है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पानी की कमी के बीच इंदर सेना पर जल डालने की प्रथा लोकविश्वास का रूप है।
- लेखक की तर्कशील दृष्टि और जीजी की आस्था के संवाद से पाठ का द्वंद्व उभरता है।

चरण 1: लेखक की आपत्ति पहचानें अकाल और सूखे के समय पानी बहुमूल्य है। लेखक को इंदर सेना के लड़कों पर पानी फेंकना उसका अपव्यय लगता है। वह तर्क और विज्ञान के आधार पर इस विश्वास को स्वीकार नहीं कर पाता कि पानी डाल देने से वर्षा होगी। उसकी आपत्ति जलसंकट की वास्तविक स्थिति से जुड़ी है। यह प्रसंग दिखाता है कि संकट में लोकजीवन सामूहिक अनुष्ठान और आशा का सहारा भी लेता है।

चरण 2: जीजी के विश्वास का आधार समझें जीजी इसे वर्षा के लिए किया गया दान मानती हैं। जैसे किसान अच्छी फसल की आशा से बीज धरती को सौंपता है, वैसे ही पानी का दान अधिक पानी पाने की आशा से किया जाता है। यह वैज्ञानिक प्रमाण नहीं, त्याग और सामूहिक आस्था का लोकपरक तर्क है। लेखक दोनों दृष्टियों को संवाद में रखता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर सूखे में इंदर सेना पर पानी डालना लेखक को वैज्ञानिक दृष्टि से पानी की बर्बादी लगता है। जीजी इसे इंद्र को जल का दान मानती हैं और बीज बोकर फसल पाने की तरह अधिक पानी मिलने की आशा करती हैं। इस प्रकार लेखक ने जलसंकट के बीच तर्कशील विरोध और लोक की दानशील आस्था को आमने-सामने रखकर द्वंद्व रचा है।

चरण 4: निष्कर्ष पानी का अपव्यय मानने वाली तर्कदृष्टि और वर्षा हेतु दान मानने वाली लोकआस्था से द्वंद्व बनता है।

त्वरित सुझाव: लेखक की आपत्ति और जीजी का बीज वाला तर्क साथ लिखें; आस्था को वैज्ञानिक सिद्ध तथ्य न कहें।

9(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'शिरीष के फूल' पाठ में लेखक द्वारा शिरीष, अवधूत और गाँधी जी को समानांतर किस आधार पर रखा गया है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष प्रतिकूल मौसम में भी फूलता है और अपनी सहजता बनाए रखता है।
- अवधूत और गाँधी जी की अनासक्ति पलायन नहीं, कठिन परिस्थितियों में धैर्य और लोकहित की शक्ति है।

चरण 1: शिरीष और अवधूत की समानता बताएं शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी कोमल फूलों से लदा रहता है। बाहरी प्रतिकूलता उसके भीतर का उल्लास समाप्त नहीं कर पाती। लेखक उसे अवधूत जैसा मानता है, क्योंकि अवधूत सुख-दुःख और बाहरी उलझनों में आसक्त हुए बिना मस्ती, सहनशीलता और सहजता बनाए रखता है। यह तुलना बाहरी रूप की नहीं, आंतरिक दृढ़ता की है।

चरण 2: गाँधी जी से संबंध जोड़ें गाँधी जी भी हिंसा और सांप्रदायिक विद्वेष के वातावरण में प्रेम, अहिंसा और मानवता के प्रति अडिग रहे। उनका धैर्य कठिनाइयों की उपेक्षा नहीं था; वह लोकहित के लिए सक्रिय रहने का नैतिक बल था। इसी प्रकार शिरीष की कोमलता दुर्बलता नहीं, विपरीत स्थितियों के बीच जीवन के सौंदर्य की रक्षा है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक ने शिरीष, अवधूत और गाँधी जी को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनासक्त, सहज और अडिग रहने के आधार पर समानांतर रखा है। शिरीष लू में भी खिलता है, अवधूत सुख-दुःख से निर्लिप्त रहता है और गाँधी जी हिंसा के बीच प्रेम तथा अहिंसा पर टिके रहते हैं। तीनों में कठिनाइयों से हारने के बजाय जीवन और लोकमंगल की साधना करने की शक्ति है।

चरण 4: निष्कर्ष तीनों की समानता विपरीत परिस्थितियों में अनासक्ति, धैर्य और जीवनमूल्यों के प्रति अडिग रहने में है।

त्वरित सुझाव: शिरीष के खिलने, अवधूत की निर्लिप्तता और गाँधी जी की अहिंसा को एक साझा आधार से जोड़ें।

10(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

लुट्टन सिंह के पक्ष में न तो राजमत था और न ही बहुमत, फिर भी उसे कुश्ती में विजय कैसे प्राप्त हुई ? 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथा में ढोलक की ताल लुट्टन के लिए गुरु और मार्गदर्शक का कार्य करती है।
- विपरीत समर्थन के बावजूद साहस, दाँव और आत्मविश्वास से स्थिति बदली जा सकती है।

चरण 1: विपरीत स्थिति और सहारा पहचानें लुट्टन के सामने प्रसिद्ध पहलवान था और राजदरबार तथा दर्शकों का समर्थन भी उसके प्रतिद्वंद्वी के पक्ष में था। फिर भी लुट्टन ने हिम्मत नहीं छोड़ी। ढोलक की लय ने उसे मानसिक सहारा दिया; वह उसकी ताल को कुश्ती के निर्देश की तरह ग्रहण करता रहा। उसके लिए ढोलक का स्वर निष्क्रिय मनोरंजन नहीं था, बल्कि संघर्ष में टिके रहने की सक्रिय प्रेरणा था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लुट्टन ने ढोलक की ताल को अपना गुरु मानकर उससे दाँव-पेंच की प्रेरणा ली। ताल ने उसका साहस और आत्मविश्वास बनाए रखा। उसने अवसर देखकर सही दाँव लगाया और प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ दिया। इस प्रकार राजमत तथा बहुमत के विरोध पर उसकी लगन और कुशलता भारी पड़ी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक से मिली प्रेरणा, आत्मविश्वास और सही दाँव ने लुट्टन को विजयी बनाया।

त्वरित सुझाव: विजय का कारण केवल शारीरिक बल न लिखें; ढोलक की ताल से मिले मार्गदर्शन को अवश्य जोड़ें।

10(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

श्रम विभाजन और श्रमिक विभाजन का अंतर 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में श्रम-विभाजन कार्यों के बँटवारे का विषय है, जबकि श्रमिक-विभाजन व्यक्तियों के सामाजिक वर्गीकरण का।
- अंतर स्पष्ट करते समय योग्यता और चुनाव की स्वतंत्रता की तुलना जन्म-आधारित बंधन तथा ऊँच-नीच से करनी चाहिए।

चरण 1: श्रम-विभाजन का आधार समाज में अलग-अलग कार्यों का बँटवारा आवश्यक हो सकता है। उचित श्रम-विभाजन व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण के अनुकूल होता है। उसमें व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार पेशा चुन या बदल सकता है; किसी काम को करने से उसकी मानवीय गरिमा कम नहीं होती।

चरण 2: श्रमिक-विभाजन का आधार जाति-प्रथा कामों के साथ काम करने वालों को भी जन्म से निश्चित श्रेणियों में बाँट देती है। ये श्रेणियाँ ऊँच-नीच पर टिकी होती हैं। इसमें व्यक्ति की रुचि और दक्षता गौण हो जाती है तथा पैतृक व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता बाधित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष श्रम-विभाजन कार्यों का बँटवारा है, जो योग्यता और रुचि पर आधारित हो सकता है। जाति-प्रथा का श्रमिक-विभाजन व्यक्तियों को जन्म के आधार पर ऊँच-नीच की श्रेणियों में बाँधता है और पेशा चुनने या बदलने की स्वतंत्रता रोकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कार्यों का बँटवारा और मनुष्यों का जन्म-आधारित वर्गीकरण अलग-अलग स्पष्ट करें।

10(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' पाठ के आधार पर लिखिए कि लोकतंत्र से क्या अभिप्राय है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर के लिए लोकतंत्र शासन-पद्धति के साथ सामाजिक जीवन की पद्धति भी है।
- लोकतांत्रिक समाज का आधार साझा अनुभव, परस्पर संपर्क, सम्मान और बंधुता है।

चरण 1: लोकतंत्र का व्यापक अर्थ लेखक लोकतंत्र को केवल चुनाव अथवा सरकार बनाने की व्यवस्था तक सीमित नहीं मानते। यह ऐसा सहजीवन है जिसमें लोग एक-दूसरे के अनुभवों और हितों में भाग लें। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क और विचारों का आदान-प्रदान बना रहना चाहिए।

चरण 2: सामाजिक संबंधों का स्वरूप ऐसे समाज में प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आदर का भाव रहता है। जन्म और जाति की दीवारें लोगों को एक-दूसरे से अलग नहीं करतीं। स्वतंत्रता, समता और बंधुता पर टिके संबंध लोकतंत्र को व्यवहार में सार्थक बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लोकतंत्र केवल शासन-पद्धति नहीं, साथ मिलकर रहने और सामूहिक अनुभवों के आदान-प्रदान की रीति है। इसमें सभी के प्रति सम्मान, विभिन्न वर्गों के बीच खुला संपर्क तथा स्वतंत्रता, समता और बंधुता का भाव होता है। यही आदर्श सामाजिक जीवन है।

त्वरित सुझाव: लोकतंत्र की परिभाषा में शासन के साथ सहजीवन, साझे अनुभव और परस्पर सम्मान अवश्य जोड़ें।

11(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'अभी तुम्हारे अब्बा की इतनी साख है कि सौ रुपए उधार ले सके।' – यह कथन यशोधर बाबू द्वारा किन परिस्थितियों में कहा गया ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का प्रसंग रिश्तेदारी के दायित्व और नई पीढ़ी की आर्थिक प्राथमिकताओं के टकराव से जुड़ा है।
- यशोधर बाबू की प्रतिक्रिया में चोट खाया स्वाभिमान और अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा का विश्वास प्रकट होता है।

चरण 1: कथन की परिस्थिति पहचानें यशोधर बाबू रिश्तेदारों के सुख-दुख में शामिल होना और उनकी सहायता करना अपना कर्तव्य मानते थे। वे चाहते थे कि उनके बच्चे भी पारिवारिक संबंधों को महत्त्व दें। लेकिन उनके कमाऊ बेटे ने अपनी बुआ को भेजने के लिए पैसे देने से साफ इनकार कर दिया।

चरण 2: प्रतिक्रिया का आशय समझें बेटे के इनकार से यशोधर बाबू के आत्मसम्मान को ठेस पहुँची। उन्होंने अपनी साख का उल्लेख करके जताया कि वे बेटे के पैसे पर पूरी तरह निर्भर नहीं हैं। जरूरत पड़ने पर अपनी प्रतिष्ठा के आधार पर उधार लेकर भी वे संबंध निभाने का दायित्व पूरा कर सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू अपने रिश्तेदारों की सहायता और पारिवारिक संबंधों को महत्त्व देते थे। जब कमाऊ बेटे ने अपनी बुआ को भेजने के लिए पैसे देने से इनकार किया, तो उनका स्वाभिमान आहत हुआ। तभी उन्होंने सौ रुपए उधार ले सकने की अपनी साख जताई।

त्वरित सुझाव: प्रसंग में बेटे का बुआ को पैसे भेजने से इनकार और पिता के आहत स्वाभिमान का संबंध स्पष्ट करें।

11(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'प्रोत्साहन से आत्मविश्वास को दृढ़ता मिलती है।' – 'जूझ' कहानी के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मकथात्मक पाठ में संघर्षशील बालक की शिक्षा और काव्य-रुचि के विकास को पहचानना है।
- गुरु का विश्वास तथा प्रोत्साहन विद्यार्थी को अपनी क्षमता पहचानने और अभ्यास जारी रखने की शक्ति देते हैं।

चरण 1: प्रोत्साहन का प्रसंग पाठ में न. वा. सौंदलगेकर मास्टर कविता को भावपूर्वक पढ़ाते थे। उनका सस्वर पाठ और कविताओं का आनंदपूर्ण विवेचन लेखक को बहुत प्रभावित करता था। लेखक खेतों में काम करते हुए भी कविताएँ गुनगुनाने लगा और स्वयं कविता रचने की ओर बढ़ा।

चरण 2: आत्मविश्वास पर प्रभाव मास्टर ने लेखक की कविताएँ ध्यान से सुनीं, उसकी रचनात्मकता की सराहना की तथा उसे मार्गदर्शन दिया। इससे लेखक का संकोच घटा और उसे अपनी प्रतिभा पर भरोसा हुआ। खेती और कठिन परिस्थितियों के बीच भी वह कविता लिखने और सीखने का अभ्यास करता रहा।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर मास्टर के भावपूर्ण काव्यपाठ ने लेखक को कविता रचने की प्रेरणा दी। उन्होंने उसकी कविताएँ सुनकर प्रशंसा और मार्गदर्शन दिया। इस प्रोत्साहन से लेखक का संकोच दूर हुआ, अपनी प्रतिभा पर विश्वास बढ़ा और वह कठिन परिस्थितियों में भी रचना करता रहा।

त्वरित सुझाव: कथन सिद्ध करने के लिए शिक्षक का प्रोत्साहन और लेखक के आत्मविश्वास में आया परिवर्तन साथ लिखें।

11(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

साधन संपन्न, समृद्ध सभ्यता होते हुए भी सिंधु घाटी सभ्यता की संपन्नता की बात इतिहास में कम क्यों हुई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता की संपन्नता को राजसी प्रदर्शन के बजाय नगर-योजना और जनजीवन से पहचानना है।
- इतिहास में भव्य राजमहलों, समाधियों और सत्ता के स्मारकों को प्रायः अधिक महत्त्व दिया गया है।

चरण 1: संपन्नता का अलग स्वरूप मोहनजोदड़ो की समृद्धि सुव्यवस्थित नगर, जल-निकासी, स्नानागार, घरों और उपयोगी वस्तुओं में झलकती है। यहाँ संपन्नता का आधार नागरिक सुविधाएँ और विकसित जीवन-संस्कृति है। उसका स्वरूप केवल राजा या धर्मसत्ता के वैभव का सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं है।

चरण 2: इतिहास में अपेक्षाकृत कम चर्चा का कारण दूसरी प्राचीन सभ्यताओं के विशाल राजप्रासाद, भव्य मंदिर और राजाओं की समाधियाँ इतिहासकारों का ध्यान अधिक खींचती हैं। सिंधु सभ्यता में वैसी राजसी भव्यता और स्मारकीय प्रदर्शन के प्रमाण नहीं मिलते। इसलिए उसकी नागरिक और कलात्मक समृद्धि की चर्चा तुलनात्मक रूप से कम हुई।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता की समृद्धि भव्य राजमहलों, मंदिरों और राजकीय समाधियों के प्रदर्शन में नहीं, सुव्यवस्थित नगरों, नागरिक सुविधाओं और कलात्मक जीवन में थी। इतिहास में राजसी स्मारकों को अधिक महत्त्व मिलने से इस कम दिखावटी, जनजीवन-केंद्रित संपन्नता की चर्चा अपेक्षाकृत कम हुई।

त्वरित सुझाव: संपन्नता की कमी न लिखें; राजसी प्रदर्शन के अभाव और नागरिक संस्कृति की समृद्धि का अंतर बताएँ।

12(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जीवन में सदाचार का महत्त्व [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सदाचार में सत्य, ईमानदारी, विनम्रता और दूसरों के प्रति संवेदना जैसे गुण शामिल होते हैं। लेख में इन गुणों का जीवन से संबंध स्पष्ट करना चाहिए।
- रचनात्मक लेख में संक्षिप्त भूमिका, उदाहरणों सहित विषय का विकास और सार्थक समापन होना चाहिए। लगभग 120 शब्दों में विचारों की एकसूत्रता बनाए रखें।

चरण 1: लेख की रूपरेखा आरंभ में सदाचार का अर्थ दें। इसके बाद व्यक्तिगत जीवन में आत्मविश्वास तथा सामाजिक जीवन में विश्वास बढ़ाने की भूमिका बताएं। दैनिक व्यवहार के छोटे उदाहरण जोड़कर लेख को अनुभव से जोड़ें।

चरण 2: विचारों का संयोजन और भाषा की जाँच भूमिका से आगे बढ़ते हुए परिवार, विद्यालय और समाज का क्रम अपनाएं। अंत में अपने आचरण को सुधारने का संकल्प रखें। विषय विवेचनात्मक है, इसलिए पता, दिनांक या संबोधन देने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख जीवन में सदाचार का महत्त्व

सदाचार मनुष्य के व्यक्तित्व की वह सुगंध है, जो उसके व्यवहार से फैलती है। सत्य बोलना, ईमानदारी से काम करना और दूसरों का सम्मान करना इसके आधार हैं। धन और पद क्षणिक प्रतिष्ठा दे सकते हैं, पर अच्छा आचरण स्थायी विश्वास अर्जित करता है। परीक्षा में नकल से बचना, मिली हुई वस्तु लौटाना और कमजोर साथी की सहायता करना सदाचार के सहज उदाहरण हैं। ऐसे छोटे कार्य व्यक्ति को भीतर से मजबूत बनाते हैं। परिवार में बड़ों का आचरण बच्चों को सही दिशा देता है। समाज में सदाचार बढ़े तो छल, भ्रष्टाचार और कटुता घटें। इसलिए सफलता की दौड़ में हमें अपने मूल्यों को नहीं खोना चाहिए। सदाचारी जीवन आत्मसंतोष देता है और दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और विषयानुकूल रहे तथा सभी विचार मुख्य विषय से जुड़े हों। लेख का केंद्रीय विचार यह है कि सदाचार व्यक्ति को आत्मसंतोष और समाज को विश्वास देता है। नैतिक गुणों को दैनिक जीवन के उदाहरणों से जोड़ने पर लेख

प्रभावी बनता है।

त्वरित सुझाव: सदाचार पर लिखते समय केवल गुण न गिनाएं; परीक्षा में ईमानदारी या मिली वस्तु लौटाने जैसा ठोस उदाहरण अवश्य जोड़ें।

12(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
सौर ऊर्जा: ऊर्जा का अक्षय स्रोत [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सौर ऊर्जा सूर्य के प्रकाश से प्राप्त होती है। इसे सौर पैनलों से बिजली और सौर ताप उपकरणों से ऊष्मा के रूप में उपयोग में लाया जाता है।
- रचनात्मक लेख में विषय का परिचय, उपयोगिता, व्यावहारिक सीमाओं का संक्षिप्त उल्लेख तथा आशापूर्ण निष्कर्ष रखें। लगभग 120 शब्दों की सीमा में विषय पर केंद्रित रहें।

चरण 1: लेख की रूपरेखा सूर्य के प्रकाश के सहज अनुभव से भूमिका बनाएं। फिर सौर ऊर्जा के घरेलू तथा सार्वजनिक उपयोग बताएं। प्रदूषण घटाने और परंपरागत ईंधनों पर निर्भरता कम करने के लाभ स्पष्ट करें।

चरण 2: विचारों का संयोजन और भाषा की जाँच सौर ऊर्जा को अक्षय कहने का आशय स्पष्ट करें। प्रारंभिक खर्च और रात के समय भंडारण की जरूरत का संतुलित उल्लेख करें। अंत में स्वच्छ भविष्य के लिए इसके विवेकपूर्ण उपयोग का आह्वान करें।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख सौर ऊर्जा : ऊर्जा का अक्षय स्रोत

हर सुबह सूर्य हमारे लिए प्रकाश के साथ ऊर्जा की अपार संभावना लेकर आता है। कोयला और पेट्रोलियम सीमित हैं, जबकि सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा अक्षय है। सौर पैनल धूप को बिजली में बदलकर घरों, विद्यालयों और खेतों की जरूरतें पूरी कर सकते हैं। सौर कुकर तथा जल तापक भी उपयोगी उपकरण हैं। इनके संचालन से धुआँ नहीं निकलता और परंपरागत ईंधनों पर निर्भरता घटती है। भारत जैसे धूप वाले देश में इसकी बड़ी संभावनाएँ हैं। हालांकि उपकरण लगाने का प्रारंभिक खर्च और रात के लिए ऊर्जा का भंडारण चुनौतियाँ हैं, फिर भी उचित योजना से इन्हें कम किया जा सकता है। छतों पर सौर पैनल अपनाकर हम स्वच्छ पर्यावरण और सुरक्षित ऊर्जा भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लेख की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और विषयानुकूल रहे तथा सभी विचार मुख्य विषय से जुड़े हों। सौर ऊर्जा स्वच्छ ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण विकल्प है। उपयोग, लाभ और सीमाओं को संतुलित रूप से जोड़कर लिखा गया लेख अक्षय ऊर्जा के विषय को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: सौर ऊर्जा के लेख में पैनल, कुकर या जल तापक का उदाहरण दें और अक्षय होने को हर समय बिजली मिलने के समान न मानें।

12(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
रेल की खिड़की से बाहर का दृश्य [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में किसी साधारण अनुभव को कल्पना, संवेदना और सजीव भाषा के सहारे अभिव्यक्त किया जाता है। इस विषय में रेल की खिड़की देखने वाले यात्री का दृष्टिबिंदु है।
- दृश्य-वर्णन में रंग, गति, ध्वनि और मन की प्रतिक्रिया का स्वाभाविक मेल होना चाहिए। लगभग 120 शब्दों में एक संगठित अनुभव प्रस्तुत करना है।

चरण 1: विषय और प्रारूप तय करना शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। लेख का आरंभ रेल के चलने और बाहर दृष्टि जाने से किया जा

सकता है। फिर खेत, पेड़, गाँव और नदी जैसे दृश्यों को यात्रा के क्रम में रखें। अंतिम पंक्तियों में इन दृश्यों से उत्पन्न अनुभूति व्यक्त करें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए इसमें पत्र की तरह पता और संबोधन नहीं आएँगे।

चरण 2: वर्णन को अनुभव से जोड़ना केवल दिखाई देने वाली वस्तुओं की सूची देने से लेख नीरस हो जाएगा। पेड़ों के पीछे भागने का आभास रेल की गति को व्यक्त कर सकता है। मिट्टी की गंध और पहियों की लय से वातावरण जीवंत होगा। बाहर के बदलते दृश्यों और भीतर उठती प्रसन्नता के बीच संबंध बनाएँ। भाषा सहज रखें और अनावश्यक विस्तार से बचें।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **रेल की खिड़की से बाहर का दृश्य**

रेल चली तो खिड़की के बाहर का संसार जैसे जाग उठा। हरे खेतों पर सुबह की धूप बिखरी थी। कहीं किसान झुककर फसल सँभाल रहे थे, कहीं बच्चे पगडंडी पर दौड़ते हुए हाथ हिला रहे थे। पास के पेड़ पीछे भागते लगते, पर दूर की पहाड़ियाँ हमारे साथ चलती जान पड़तीं। अचानक एक नदी आई। पुल पर पहियों की गड़गड़ाहट गूँजी और पानी पर धूप के टुकड़े काँप उठे। छोटे स्टेशन पर चाय की पुकार सुनाई दी। हवा में मिट्टी की परिचित गंध थी। मोबाइल जेब में रखकर मैं देर तक बाहर देखता रहा। लगा, देश को जानने के लिए कभी खिड़की के पास बैठना भी जरूरी है। यात्रा केवल दूरी नहीं घटाती, वह हमारी दृष्टि भी विस्तृत करती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में रेल की खिड़की से दिखते बदलते दृश्यों, यात्रा की ध्वनियों और यात्री की अनुभूति को एक सूत्र में पिरोया गया है। लगभग 120 शब्दों का नमूना विषय का सजीव और व्यक्तिगत चित्र प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: रेल-यात्रा का वर्णन लिखते समय एक दृश्य, एक ध्वनि और एक मनोभाव अवश्य जोड़ें; अंत को अपनी अनुभूति से पूरा करें।

13(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :
समाचार पत्र-पत्रिका के संदर्भ में लेख से क्या तात्पर्य है ? लेख लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार पत्र-पत्रिका में लेख किसी विषय का विचारपूर्ण और तथ्याधारित विवेचन होता है। यह पाठक को सूचना देने के साथ विषय को समझने की दृष्टि भी देता है।
- अच्छे लेख की विशेषताएँ विषय की स्पष्टता, प्रामाणिक तथ्य, तार्किक क्रम और पाठक के अनुकूल भाषा हैं।

चरण 1: प्रश्न के दोनों पक्ष पहचानना पहले लेख का अर्थ बताना है और फिर लेख लिखते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ देनी हैं। केवल समाचार की परिभाषा देना पर्याप्त नहीं होगा। समाचार घटना की सूचना देता है, जबकि लेख किसी विषय का विवेचन करते हुए उसके विभिन्न पक्षों को खोलता है। उत्तर का केंद्र समाचार पत्र-पत्रिका का पाठक होना चाहिए।

चरण 2: आवश्यक बातों का चयन करना विषय की जानकारी जुटाना, तथ्यों की जाँच करना, विचारों को क्रम देना और भाषा को स्पष्ट रखना लेख-लेखन की प्रमुख आवश्यकताएँ हैं। आकर्षक शीर्षक पाठक का ध्यान खींचता है; भूमिका विषय में प्रवेश कराती है और निष्कर्ष विचार को समेटता है। उत्तर में इन्हीं बातों को संक्षेप में जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर समाचार पत्र-पत्रिका में प्रकाशित लेख किसी विषय, समस्या या घटना का तथ्यपूर्ण, विचारात्मक विवेचन है। लेख लिखते समय विषय का पर्याप्त अध्ययन, तथ्यों की प्रामाणिकता, विचारों का तार्किक क्रम तथा पाठकों की रुचि का ध्यान रखना चाहिए। शीर्षक आकर्षक, भूमिका प्रभावी, भाषा सरल और स्पष्ट तथा निष्कर्ष सार्थक हो। अनावश्यक विस्तार, पुनरावृत्ति और अप्रमाणित दावों से बचना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष लेख का उद्देश्य किसी विषय की सुव्यवस्थित समझ देना है। तथ्य, विचार, भाषा और प्रस्तुति की सावधानियाँ मिलकर उसे प्रभावी बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में पहले एक वाक्य में लेख का अर्थ लिखें, फिर तथ्य, क्रम, भाषा और शीर्षक से जुड़ी सावधानियाँ जोड़ें।

13(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

पत्रकारीय लेखन का संबंध किससे है और यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से अलग कैसे है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का आधार सत्यापित तथ्य और सार्वजनिक महत्त्व की घटनाएँ हैं।
- उत्तर में प्रश्न के सभी पक्षों को संबद्ध और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: संबंध और उद्देश्य पहचानें प्रश्न के पहले हिस्से में पत्रकारिता का विषय बताना है। इसका संबंध समाज में घट रही वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और समसामयिक विषयों से है। समाचार देने के साथ जनता को जागरूक करना और जनमत के निर्माण में सहायता करना भी इसका उद्देश्य है। अतः उत्तर में केवल समाचार लिखना कहना पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 2: लेखन की प्रकृति का अंतर स्पष्ट करें पत्रकारिता में तथ्य की शुद्धता, स्रोत की विश्वसनीयता, समयबद्धता और पाठक की आवश्यकता आवश्यक हैं। लेखक अपनी कल्पना से घटना या तथ्य नहीं जोड़ सकता। साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में कल्पना, अनुभूति, निजी दृष्टि और कलात्मक अभिव्यक्ति को अधिक स्वतंत्रता मिलती है। यह अंतर प्रधान प्रवृत्ति का है; पत्रकारिता की भाषा भी प्रभावशाली हो सकती है।

चरण 3: परीक्षोपयोगी उत्तर पत्रकारीय लेखन का संबंध वास्तविक घटनाओं, समसामयिक विषयों और जनहित से है। इसका उद्देश्य जनता को तथ्यपूर्ण सूचना देना, जागरूक करना तथा जनमत निर्माण में सहायता करना है। इसमें सत्यापन, वस्तुनिष्ठता और समयबद्धता आवश्यक हैं। इसके विपरीत साहित्यिक तथा सृजनात्मक लेखन में लेखक की कल्पना, निजी अनुभूति और कलात्मक अभिव्यक्ति को अधिक स्वतंत्रता मिलती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पत्रकारिता में तथ्य और जनहित को प्राथमिकता मिलती है।

त्वरित सुझाव: पहले पत्रकारिता का विषय और उद्देश्य लिखें, फिर तथ्य तथा कल्पना के आधार पर दोनों लेखन रूपों का अंतर बताएँ।

13(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

मीडिया की भाषा में 'बीट' किसे कहते हैं ? बीट रिपोर्टर बनने के लिए एक पत्रकार में क्या योग्यता होनी चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बीट समाचार-संग्रह के लिए पत्रकार को सौंपा गया निश्चित क्षेत्र या विषय है।
- उत्तर में प्रश्न के सभी पक्षों को संबद्ध और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: बीट का अर्थ निर्धारित करें मीडिया संस्थान काम को विषयों या क्षेत्रों के अनुसार बाँटते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, अपराध और राजनीति जैसे निश्चित विषय किसी रिपोर्टर को नियमित समाचार-संग्रह के लिए सौंपे जाते हैं। इसी निर्धारित कार्यक्षेत्र को बीट कहते हैं। बीट किसी एक खबर का नाम नहीं, लगातार निगरानी और रिपोर्टिंग का दायित्व है।

चरण 2: रिपोर्टर की योग्यताएँ जोड़ें एक सक्षम बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र की पृष्ठभूमि, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और वर्तमान घटनाक्रम की जानकारी चाहिए। उसे संबंधित व्यक्तियों और विश्वसनीय सूत्रों से संपर्क बनाए रखने चाहिए। सूचना को जाँचना, तथ्यों का सही संदर्भ समझना और समाचार-महत्त्व पहचानना आवश्यक है। केवल परिचय होना पर्याप्त नहीं; निष्पक्षता और पेशेवर सजगता भी चाहिए।

चरण 3: परीक्षोपयोगी उत्तर मीडिया की भाषा में बीट पत्रकार को समाचार-संग्रह के लिए सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र है, जैसे शिक्षा, अपराध या राजनीति। बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र की गहरी जानकारी, निरंतर अध्ययन और समाचार-बोध होना चाहिए। विश्वसनीय सूत्रों से संपर्क, तथ्यों की जाँच, निष्पक्ष दृष्टि तथा घटनाक्रम पर सतर्क निगाह उसकी प्रमुख योग्यताएँ हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार बीट की जिम्मेदारी निभाने के लिए विषय-ज्ञान और विश्वसनीय रिपोर्टिंग जरूरी हैं।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा के बाद विषय-ज्ञान, सूत्रों से संपर्क और तथ्य-जाँच को अलग-अलग स्पष्ट करें।

14(i)(a). मुद्रित माध्यमों में पढ़ी हुई कहानी की तुलना में दृश्य माध्यम पर देखी गई कहानी को लोग देर तक क्यों याद रखते हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्य माध्यम चित्र और ध्वनि को एक साथ प्रस्तुत करके कहानी का बहुसंवेदी अनुभव कराता है।
- उत्तर में प्रश्न के सभी पक्षों को संबद्ध और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: मुद्रित और दृश्य प्रस्तुति की तुलना करें मुद्रित कहानी में शब्द पढ़कर पाठक अपने मन में पात्रों, परिवेश और घटनाओं के चित्र बनाता है। दृश्य माध्यम इन्हें चलती छवियों, अभिनय, संवाद और ध्वनि के साथ प्रत्यक्ष कर देता है। चेहरे के भाव, हाव-भाव तथा आवाज का उतार-चढ़ाव कहानी के भाव को समझने में सहायता करते हैं।

चरण 2: स्मरण से संबंध समझाएँ दृश्य और श्रव्य संकेत एक साथ मिलने पर घटना अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनती है। पात्रों तथा घटनाओं से भावनात्मक जुड़ाव भी बढ़ता है। यही संयुक्त अनुभव स्मृति में टिकने में सहायता करता है। उत्तर में केवल चित्र सुंदर होते हैं कहना पर्याप्त नहीं; दृश्य, ध्वनि और भावनात्मक प्रभाव का संबंध बताना चाहिए।

चरण 3: परीक्षोपयोगी उत्तर दृश्य माध्यम में कहानी चित्र, संवाद, अभिनय और ध्वनि के साथ प्रस्तुत होती है। दर्शक उसे देखकर और सुनकर एक साथ अनुभव करता है। पात्रों के हाव-भाव तथा घटनाओं की जीवंतता भावनात्मक प्रभाव बढ़ाते हैं। इसलिए कहानी की घटनाएँ और पात्र स्मृति में अधिक देर तक टिके रहते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार दृश्य-श्रव्य अनुभव कहानी को स्मृति में स्थायी बनाने में सहायक होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में देखने और सुनने के संयुक्त प्रभाव को जीवंतता तथा स्मरण से जोड़ें।

अथवा

14(i)(b). "कैमरे में बंद अपाहिज" कविता के आधार पर शारीरिक चुनौती झेलने वाले व्यक्ति और दूरदर्शन कर्मी के बीच हुए संवाद के दृश्य को लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में करुणा के नाम पर संवेदनहीन प्रदर्शन और पीड़ा के व्यवसायीकरण का चित्रण है।
- उत्तर में प्रश्न के सभी पक्षों को संबद्ध और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: संवाद की परिस्थिति पहचानें दूरदर्शन कर्मी शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति से उसकी पीड़ा और अपाहिजपन के अनुभव के बारे में सवाल करता है। उसका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण बातचीत के बजाय निर्देश देने और दबाव डालने जैसा है। इसलिए दृश्य में प्रश्नकर्ता की सत्ता और सामने बैठे व्यक्ति की असहजता स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 2: दृश्य का केंद्रीय तनाव लिखें कर्मी व्यक्ति से अपना दुख बताने और रोने की अपेक्षा करता है, ताकि दर्शकों के लिए कार्यक्रम करुणापूर्ण और प्रभावशाली बने। कैमरा उसकी आँखों तथा चेहरे पर केंद्रित रहता है। कविता में यह व्यवहार संवेदनहीनता का उद्घाटन करता है; उत्तर में कर्मी को सच्चा सहायक बताना कविता के व्यंग्य को उलट देगा।

चरण 3: परीक्षोपयोगी उत्तर दूरदर्शन कर्मी शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति से उसकी पीड़ा पूछता है और उसे रोने के लिए उकसाता है। कैमरा उसकी आँखों पर टिकता है। व्यक्ति असहज है, जबकि कर्मी उसके दुख को दर्शकों के लिए करुणापूर्ण दृश्य बनाना चाहता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार यह दृश्य मीडिया की संवेदनहीनता और पीड़ा के प्रदर्शन पर व्यंग्य करता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 40 शब्दों के दृश्य में प्रश्नकर्ता का दबाव, व्यक्ति की असहजता और कैमरे का व्यवहार समेटें।

14(ii)(a). रेडियो नाटक की कहानी पूरी तरह एक्शन (क्रिया) प्रधान क्यों नहीं होनी चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम की विधा है; श्रोता पात्रों, घटनाओं और परिवेश को संवाद, ध्वनि तथा संगीत के सहारे समझता है।
- कहानी की क्रिया तभी प्रभावी होती है जब उसका अर्थ सुनकर स्पष्ट हो और घटनाक्रम श्रोता की कल्पना में आकार ले सके।

चरण 1: माध्यम की सीमा समझें रेडियो पर मंच या परदे की तरह दृश्य दिखाई नहीं देते। इसलिए दौड़ना, लड़ना, इशारा करना या वस्तु उठाना जैसी केवल दिखाई देने वाली क्रियाओं पर टिकी कहानी का घटनाक्रम श्रोता आसानी से नहीं समझ सकता। केवल लगातार आवाज़ें सुनाई देने पर यह अस्पष्ट रह सकता है कि किस पात्र ने क्या किया और उसका परिणाम क्या हुआ।

चरण 2: संवाद और ध्वनि की भूमिका बताएँ रेडियो नाटक की कथा में संवादों के माध्यम से पात्रों की स्थिति, मनोभाव और आपसी संबंध उभरने चाहिए। आवश्यक क्रियाओं का संकेत उपयुक्त ध्वनि प्रभावों तथा स्वाभाविक संवादों से दिया जा सकता है। इस तरह श्रोता घटना को समझते हुए अपनी कल्पना से उसका दृश्य रचता है और कहानी से जुड़ा रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की कहानी पूरी तरह क्रियाप्रधान नहीं होनी चाहिए, क्योंकि उसमें दृश्य दिखाई नहीं देते। कथा को संवाद, ध्वनि प्रभाव और संगीत के सहारे स्पष्ट तथा रोचक बनाना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय पहले रेडियो का श्रव्य स्वरूप बताएँ और फिर दृश्य क्रियाओं को समझाने में संवाद तथा ध्वनि की आवश्यकता जोड़ें।

अथवा

14(ii)(b). रटंत से क्या अभिप्राय है ? यह बुरी लत क्यों है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रटंत का अर्थ विषय को समझे बिना उसके शब्दों या तैयार उत्तरों को बार-बार दोहराकर याद करना है।
- रचनात्मक लेखन में स्वतंत्र चिंतन, अनुभवों का उपयोग और अपनी भाषा में अभिव्यक्ति आवश्यक है।

चरण 1: रटंत का आशय स्पष्ट करें जब विद्यार्थी किसी विचार के अर्थ और तर्क को समझने के स्थान पर तैयार सामग्री को ज्यों का त्यों याद करता है और अवसर आने पर वही दोहरा देता है, तो इसे रटंत कहते हैं। इसमें याद किए हुए शब्दों की पुनरावृत्ति होती है, विषय पर स्वयं सोचने और उसे अपने अनुभव से जोड़ने का अभ्यास कम होता है।

चरण 2: इसके दुष्परिणाम बताएँ रटंत बुरी लत इसलिए है कि यह स्वतंत्र सोच और मौलिक अभिव्यक्ति को बाधित करती है। व्यक्ति तैयार उत्तरों पर निर्भर हो जाता है; विषय या प्रश्न का रूप बदलने पर अपने ढंग से उत्तर तैयार नहीं कर पाता। अप्रत्याशित विषय पर लिखते समय भी वह अपने अनुभव, कल्पना और तर्क का उपयोग करने के बजाय याद किए हुए वाक्य खोजता है। इससे रचनात्मक क्षमता का विकास रुकता है।

चरण 3: निष्कर्ष समझे बिना शब्दशः याद करना रटंत है। यह बुरी लत है, क्योंकि इससे मौलिक चिंतन, समझ और अपनी भाषा में विचार व्यक्त करने की क्षमता बाधित होती है।

त्वरित सुझाव: रटंत की परिभाषा में समझ का अभाव लिखें और उसकी हानि को स्वतंत्र सोच तथा मौलिक अभिव्यक्ति से जोड़कर स्पष्ट करें।